24-78

प्रेम पत्र

प्यारे कॉमरेड चरणसिंह जी
सादर प्रणाम !

आपको कॉमरेड कहकर इसलिये पुकार रहा हूँ क्योंकि हर उस आदमी को कॉमरेड कहते हैं जिसकी नौकरी छूट जाती है। मुझे इस बात का अत्यन्त दुख है कि आपकी नौकरी बीमारी की हालत में, बिना तनख्वाह बढ़ाये, छुड़वा दी गई।

ऊपर के लोगों ने राजनारायण जी के रोने-धोने की भी कोई परवाह नहीं की। सब सगे-सम्बन्धी कन्नी काट गये। चीफ मिनिस्टर्स जिनको आपने खून पसीना एक करके गद्दी दिलवाई वे भी मुँह मोड़ गए, बयान बदल गए।

आपको सहारा देने वालों नें, आपको सही स्थिति बताने की बजाय, जात-पात के चक्कर में डालने की कोशिश की। डरा-धमकाकर, प्यार दिखाकर आपका इस्तीफा आपकी कलम से लिखाकर मोरारजी के चरणों में भेज दिया। मोरारजी भाई ने उसकी फुटबॉल बनाकर राष्ट्रपति के दफ्तर में भेज दी ताकि जल्दी-से-जल्दी उस पर मुहर लग जाये।

इन हालात से आपको दुःख होना जरुरी था लेकिन इन्हीं हालात से और लोगों को सुख होना जरुरी था। आपने फर्माया कि जो इन्सान अपनी बीवी को खुश नहीं रख सकता वह जनता को भी खुश नहीं रख सकता। यह बात पते की है। लेकिन शायद आप भूल गये कि भारत में पति को खुश रखने का फर्ज पत्नी का होता है। आपका फर्ज है कि आप जनता को खुश रखें, लेकिन देखना यह है कि क्या जनता आपको खुश रखना चाहती है।

आपका
चिल्ली
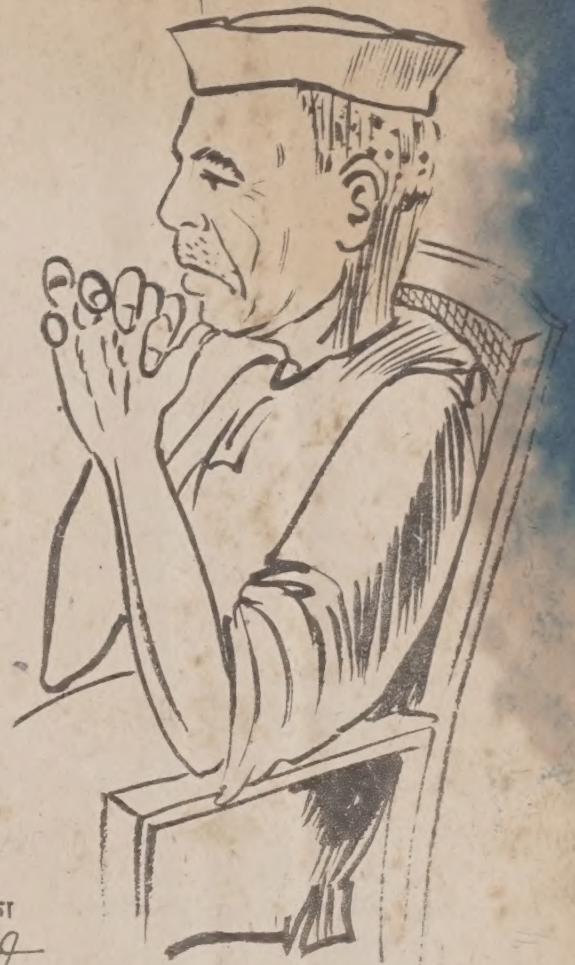
मुख पृष्ठ पर

सिलबिल खड़ा बस स्टाप पर
और प्रेमिका उसके साथ
अचानक उसी तरफ से
आया चिल्ली भोला नाथ।
ऐसा कीचड़ उछाला उन पर
हुआ कपड़ों का सत्यनास
पार्टी में रोब जमाने की
अब बुझ गई सारी आस ॥

दीवाना
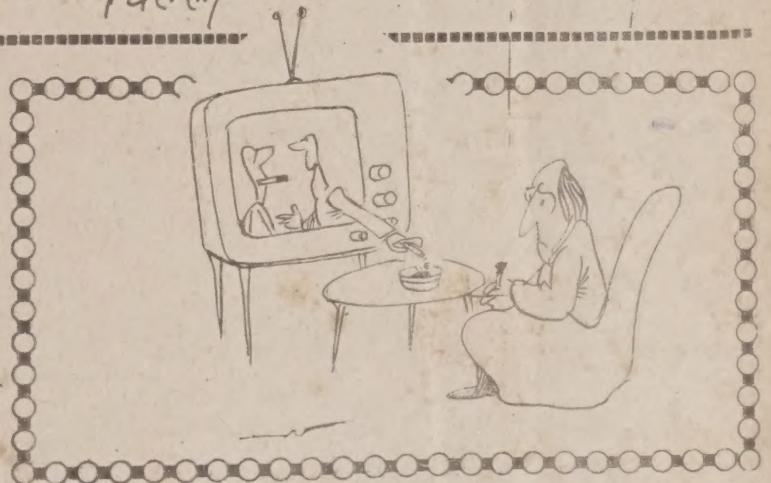
अंक : २४, १३ जुलाई से १६ जुलाई १६७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से
निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा प. १५ रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें।

कृष्णराज गिरि, ओमप्रकाश पुजारी, दुलियाजान

प्र० : प्रेम विवाह ठीक है या माता-पिता की इच्छा से की हुई शादी ?

उ० : उनकी मर्जी के बिना, करते प्रेम विवाह,
मात-पिता उसमें नहीं दिखलाते उत्साह ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

रामेश्वर, सिकन्दराबाद (आंध्र प्रदेश)

प्र० : आदमी बेवकूफ कब बन जाता है ?

उ० : नेताजी के फंद में, जब कोई फंस जाय,
बुद्धिमान भी उस समय, बुद्धूमल कहलाए ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

हरप्रीत जुनेजा, जालन्धर

प्र० : क्या खूबसूरती और वफा का मेल सम्भव है ?

उ० : भाग गए छोड़कर वे हमें इकले,
जो मिले हसीन, धोखेबाज निकले ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

तिन्द्र चानना, पानीपत

सिगरेट, शराब और प्रेम के नशे में क्या फर्क है ?

उ० घंटे तक सुरा का, दो हि मिनट सिगरेट,
जवानी जब तलक, तब तक प्रेम समेट ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नारायण व, इंदौर

प्र० : एक साथ कितनी प्रेमिकाओं को दिल में बसाने की छूट है ?

उ० : दिल का घेरा नापकर, दीजे हमें जवाब,
जगह देख बतलायेंगे, क्यों होते बेताब ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

घनश्याम जी, हासबानी, जलगांव

प्र० : लातों के भूत बातों से क्यों नहीं मानते ?

उ० : दोष भूत का कुछ नहीं, समझ न पाये बात,
द्वार बुद्धि का खुल गया, लगी गात में लात ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विकी साहनी, मार्तण्ड चौक-इंदौर

प्र० : जब आप इंदौर आए थे, मैंने आपको हार भेंट किया था ? भूल गये क्या काका जी ?

उ० : भूल गये उस 'हार' को, कुछ टाइम के बाद,
'जीत' भेंट करते अगर, रखते तुमको याद ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रेमसुख चोपड़ा, गंगाशहर (बीकानेर)

प्र० : कुछ शादी शुदा लड़कियां, मांग में सिंदूर क्यों नहीं लगातीं ?

उ० : जो लड़की माडर्न हैं, फैशन से भरपुर
उनके आगे तुच्छ हैं, बिन्दी और सिंदूर ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

बिजेन्द्र कौशिक 'नायक' धामतुर

प्र० : साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
क्या कलियुग में ठीक है, बतला दीजे आप ?

उ० : झूठ बराबर तप नहीं, सांच बराबर पाप
जिसके हिरदे सांच है, बैठा बैठा टाप ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

गणेश प्यार 'प्रीतम' जमेरिया (नेपाल)

प्र० : भीगी पलकें पूछ रही हैं, कोई उन्हें बत
आंसू बनकर प्यार भला क्यों नयनों से बह जा

उ० : रोने दो मिस्टर, यदि प्रेमी जी रोते हैं,
आंसू झड़जाने से, नेत्र साफ होते हैं ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनिल कुमार गुलाटी, रेवाड़ी

प्र० : प्यार करने से पहले क्या सोचना चाहिए ?

उ० : प्रेम पार्क में कुछ समय तक घास चरनी चा
बाद इसके, खोपड़ी मजबूत करनी चाहि

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रहलाद दास अग्रवाल, मह्र (म. प्र.)

प्र० : कुछ लड़कियां बाल क्यों कटा देती हैं ?

उ० : बाल कटाकर 'बॉबकट' लड़की घूमें आज,
लड़के बाल बढ़ा रहे, उलटा हुआ समाज ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दिलखुशराय भाटिया, बम्बई-५०

प्र० : नानाजी देशमुख ने कहा है, बूढ़ों को गद्दी चाहिए । आपकी राय ?

उ० : राजनीति मत छोड़िये, जब लग घट में प्राण,
फिर दो कौड़ी के नहीं, रह सकते श्रीमान ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

पुन्ना राम गर्ग, हाथरस

प्र० : पोखर या झील में भैंस पड़ी रहती है तो उस पानी क्यों नहीं घुसता ?

उ० : दूरदर्शिनी भैंस भवानी, मिलने क्यों दे दूध मों
यह शुभ कार्य करेगा ग्वाला, उसको क्यों पहुंचा

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारत
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफ
नई दिल्ली-११०००

अखिल भारतीय कैम्मल [ड्राइं]ग-प्रतियोगितामें भाग लीजिए।

[ह]मारी चित्र प्रतियोगिताओं में २००० [स्कू]लों के १४ लाख विद्यार्थियों ने [भा]ग लिया है. इसीसे उत्साहित होकर [अ]ब हम आयोजित कर रहे हैं सबसे [बड़]ी प्रतियोगिता.

[चि]त्र बनाने में आपकी अनूठी प्रतिमा [की] कैम्लिन कद्र करती है. भारत में [आ]प कहीं भी रहते हो, किसी भी स्कूल [में] पढ़ते हों कैम्लिन आपके पास [हा]थ घड़ियों, अलार्म घड़ियों जैसे अनेक [सुं]दर पुरस्कारों के साथ पहुंचेगी. हमारी [इस] प्रतियोगिता में भाग लीजिए.

सर्वोत्तम चित्र बनाइए. संभव है हमारे ७०० पुरस्कारों के विजेताओं में आप भी हों.

चित्र बनाने के लिए हम आपके ६ प्रिय विषय सुझाते हैं. खेल-कूद, त्योहार, पंछी, तितलियां, फूल और पशु! इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने के लिए आप में से कोई भी बहुत छोटा या बड़ा नहीं है, कक्षा के अनुसार हमने पहले ही तीन समूह बना दिये हैं.

क) पूर्व प्राथमिक से कक्षा ४
ख) कक्षा ५ से कक्षा ८
ग) कक्षा ९ से कक्षा ११

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है. आपको अपने बनाये चित्र के साथ बस एक एंट्री कूपन भेजना होगा. यह कूपन प्रतियोगिता के नियमो के साथ स्टूडेंट्स एंड आर्टिस्ट्स वाटर कलर केक्स, स्टूडेंट्स वाटर कलर ट्यूब्स, पोस्टर कलर ट्रायल पेक्स और ऑयल पेस्टलस के साथ मिलते हैं.
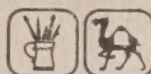
कैम्लिन प्राईवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिव्हीजन
अंधेरी, बम्बई-४०० ०५९

३०,००० रु. मूल्य के ७०० पुरस्कार!

[आ]ज ही अपने लिए कैमल कलर [ख]रीदिए.

[प्र]तियोगिता अवधिः
जून-सितम्बर, १९७८.

गरीबी हटाओ

फिल्मी स्टाइल

हमने अपने संवाददाता पिचकू राम को प्रसिद्ध फिल्मी अभिनेता, अभिनेत्रियों से इन्टरव्यू लेने भेजा कि भारत से गरीबी किस तरह दूर हो सकती है ! उनके फिल्मी फार्मूले सुनिये ।

गरीबी दूर करने के लिये गरीबों को सरकारी नौकरियों में अच्छे रोल मिलने चाहियें जैसे मुझे राजकपूर की फिल्म में मिला है ।

अच्छा रियली ! इंडिया में गरीब लोग भी हैं ? डोन्ट फूल मी यार ।

गरीबी हिन्दुस्तान के लिये जरूरी है गरीबी नहीं होगी तो गरीबों और अमीरों पर आधारित फिल्में कैसे बनेंगी ? गरीबी दूर करने की जरूरत क्या है ?

गरीब औरतों के लिये गौरमेंट को बॉयफ्रेंड राशन कार्ड पर देना चाहिये ।
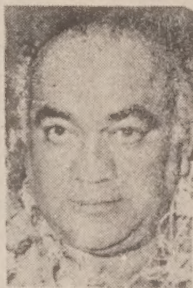
शराब पिलाओ शराब पीते ही गरीब भी नवाब साहब बन जायेगा ।

प्यार ही सबसे बड़ी दौलत है, गरीबों को प्यार की फ्रीडम मिलनी चाहिये

हर गरीब को अभिनय की ट्रेनिंग मिलनी चाहिये ताकि वह अमीर का रोल कर सके । एक साथ तीन-तीन रोल तक किये जा सकते हैं ।

गरीबी दूर करने का एक ही मंत्र है "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" ।

गरीब लोगों को हिट फिल्म की अभिनेत्री से शादी करनी चाहिये, गरीबी खुद ही दूर हो जायेगी ।

अरे भाई, गन्ना बोओ और खुशहाल हो जाओ। गन्ने की खेती में जितना पैसा है और कहीं नहीं।
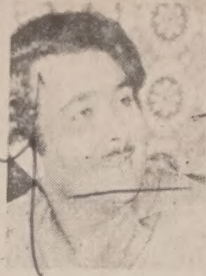
कितने खुश नसीब हैं गरीब जिनको डायटिंग करने की जरुरत ही नहीं पड़ती।

गरीबों की गरीबी दूर करने के लिये महत्वाकांक्षा के अकुर होना जरूरी है। फिर कर्म भी करना ही पड़ेगा।

कौन कहता है कि गरीब गरीब है? गरीब को जो खुशी छोटी सी बात देती है अमीरों को वही खुशी करोड़ों रूपया भी नहीं दे सकता।

गरीबों को भारत नाट्यम् सीखना चाहिये। शास्त्रीय कला सबसे बड़ा धन है।

गरीबों को गीत गाते चलना चाहिये। गीत गाने से गरीबी भी महसूस नहीं होती।

गरीबों को अमीरों की एक्टिंग आनी चाहिये जैसे बूढ़ों को जवानों की एक्टिंग आती है।

गरीबों को पहली बात यह है कि यह समझना चाहिये कि हम किसी से कम नहीं।

गरीबों को स्ट्रगल करना चाहिये उनका गुस्सा बारूद है। उसमें चिंगारी की जरूरत है।

सभी गरीबों को स्मगलिंग के परमिट दिये जाने चाहियें स्मगलिंग से गरीबी दूर हो जाती है।

गरीबी हटाने का एक ही तरीका है वह यह कि गरीबी का कांट्रेक्ट कैंसिल कर दिया जाये।

सब गरीबों को बालसफा साबुन देकर उनके बाल साफ करवाने चाहियें क्योंकि गंजापन अमीरी की निशानी माना जाता है।

गरीबों को अमीरों का सहायक रोल करना होगा। यह तो सदियों से चला आ रहा है। गरीब नहीं होंगे तो सहायक रोल कहां होंगे।

गरीब एक छलावा है। संसार में सब अमीर हैं, भगवान रजनीश से जाकर पूछो।

इट इज ए सिम्पल थिंग यार हर गरीब अपनी बहन का = डिम्पल रख दे वह आटोमेटीक अमीर हो जायेगा।

गरीबों की सुनवाई तभी हो सकती है जब उन्हें डायलाग डिलीवरी की कला आ जाये।
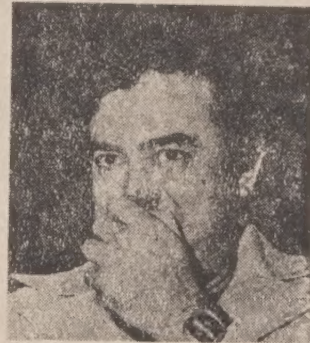
गरीबों में शादी बैन करो। शादी ही बरबादी की जड़ है।
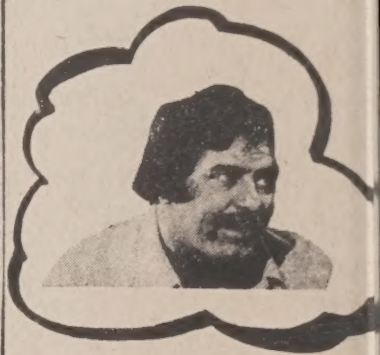
गरीबी की टांग तोड़ दो।

सब गरीबों को राशन कार्ड पर ट्रांजिस्टर मिलने चाहियें ताकि कमेंट्री सुन कर अपनी गरीबी भुला सकें।

बच्चा धन है! जितने ज्यादा बच्चे पैदा करोगे तुम उतने ही धनी होगे।

ठहरो, मैं जौहर-महमूद इन गरीब बनाऊंगा तब देखना।

हर गरीब आदमी की बीबी को फिल्मों में हीरोइन का रोल करना चाहिये।

गरीब की लड़कियों को चाहिये कि वे किसी बूढ़े अमीर खूसट से शादी कर लें।

मैं क्या बताऊं भई? सिर्फ एक बा है गरीब लोग को हीरो बनाने व ट्राई मत करना, जैसा हम अपने ह बैंड को किया।

इकलौती इच्छा

ऐ काश ! किसी संपादक को हमसे भी मोहब्बत हो जाए ।
कुछ छप जाए, कुछ खप जाए, लिल्लाह इनायत हो जाए ॥
हर बात को, हर एक चर्चे को, हम अपना लेख बना डालें ;
अब तक जितनी वापस आई, सब रचनाएँ छपवा डालें ।
चाहे उनके घटियापन से, लोगों को शिकायत हो जाए ॥
ऐ काश ! किसी संपादक को..........................

जैसे अच्छे सपने के लिए, हर भोर सुनहरा अवसर है ;
बस वैसे ही छपने के लिए, फिल्मी पैरॉडी बेहतर है ।
छंदों की रियायत हो जाए, शब्दों की किफायत हो जाए ॥
ऐ काश ! किसी संपादक को..........................

—डॉ० हरिश्चन्द्र पाठक

बादल

वायुयान से दौरा करते, करें हवा से बातें बादल ।
मूल्य बढ़े ज्यों उठी घटायें, नेता से मुस्काते बादल ॥
गर्मी बुझा, तपन को पीटा, लू-लपटों को धूल चटाकर ,
टप्-टप् बूंदें, लप-लप बिजली, दो-दो हाथ दिखाते बादल ॥
चमचा सी पुरवैया संग ले, मौसम से कर काना फूंसी ,
कहीं बाढ़, कब धूल उड़ायें, अपनी जात बताते बादल ॥
सूरज से कर आँख मिचौनी, कभी उजागर कभी छिपैयों ,
मंत्री पद पा जैसे नेता, जनता से कतराते बादल ॥
घटाटोप की छतरी ताने, गरज-गरज कर लगते नारे ,
श्वेत-श्याम-पीले दल-बदलू, नभ-कुर्सी हथियाते बादल ॥
समय गया, सत्ता से च्युत हो, हुआ पराजित ऋतु के आगे ,
फूट-फूट कर रोये निगोड़े, बूंदें बन गल जाते बादल ॥

आजाद रामपुरी
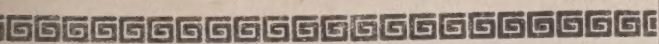
चना कुरमुरा

पति बाहर के द्वार के नीचे पड़ी चिट्ठी उठाने गया ।

जैसे ही उसने पत्र खोला, पत्नी ने पूछा, "तुम्हारा है ?"

"हाँ ।"

"किसका है ?"

"विनोद का ।"

"क्या लिखता है ?"

"खास नहीं । तुम यह सब क्यों पूछ रही हो ?"

"लो !" पत्नी झुंझलाई, "फिर तुमने मेरी बात में टाँग अड़ाई ।"

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

पवन बहादुर 'दीवाला'—नाहोलिया : मैंने [illegible] यहां क्यों और कैसे, आपस की बातें, [illegible] और आपके पत्र में भाग [illegible]

[illegible] व भाव फैलाने की बजाए [illegible] एक स्तम्भ में अधिक रोचक सामग्री भेजिये।

दिलावर सिंह—खण्डेलवाल : चाचा जी, आपका यह प्यारा भतीजा डाकू बनना चाहता है, इसके लिए क्या करना चाहिए?

उ० : पहले तो लूटमार के लिये कुछ भी नहीं करना पड़ता था और लोग कहते थे :

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट,
अंत समय पछतायेगा, जब प्राण जायेंगे छूट।

आजकल इसका मतलब बदल गया है, पर काम अब बहुत आसान है। बस 'अंत' की बात न भूलियेगा :

उसका एक सहारा हो जो पहने देसी सूट,
सर पर उजली टोपी, हो हर बात की जिसको छूट।
निकल जाओ फिर किसी सड़क पर कोई सा पकड़ो रूट,
लाकानूनी अफरा तफरी मचाओ चारों खूंट।
पकड़ी गर्दन छोड़ो ना जब तक गर्दन जाये टूट,
बड़ा आदमी पीछे हो तो किसी को कर दो शूट।
सुबह शाम की लूट है प्यारे लूट सके तो लूट,
अंत समय पछताएगा जब जनता मारे बूट।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : मधुर सपनों में खो रहा हूं। अब क्या होगा?

उ० : वही जो सपना टूटने पर होता है। मतलब है, अगर आप अपने मधुर सपने में देख रहे हैं कि आप केक पेस्ट्री और रसगुल्ले खा रहे हैं तो सपना टूटने पर पता चलेगा कि आप जिस दरी या चटाई पर सो रहे थे, उसे सोते-सोते आधी खा गए हैं।

सुल्तान अहमद सुल्तान—अलीगढ़ : यह जानते हुए भी कि ईमानदारी से फायदा ही फायदा है, मनुष्य ईमानदार क्यों नहीं बनता?

उ० : फायदे के साथ-साथ नुकसान भी बहुत है सुल्तान अहमद साहब! अगर इन्सान पूरी तरह ईमानदार हो जाए तो कहीं ताला लगाने की जरूरत नहीं रहेगी और अलीगढ़ की ताला इंडस्ट्री के फेल होने से जो मजदूर बेकार होंगे वह चोरी चकारी का पेशा अपनाने लगेंगे।

शिव शंकर प्रसाद—मेरठ : क्या आप भगवान से कोई प्रार्थना करते समय दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखते हैं?

उ० : सदा औरों की भलाई का ही ख्याल रखते हैं। आज सुबह ही जब हमने श्रीमती जी के बनाए खाने की बुराई की और उन्होंने प्लेट उठाकर हम पर दे मारनी चाही तो हमने देखा, हमारे दायें ओर टेलीविजन था बायें ओर रेडियो था और पीछे नाजुक शीशे की बड़ी खिड़की थी। तब हमने भगवान से प्रार्थना की, 'हे भगवान, किसी तरह श्रीमती जी का निशाना न चूके और प्लेट सीधी हमारी छाती पर ही लगे।' यह प्रार्थना हमने टेलीविजन रेडियो और शीशे की खिड़की की भलाई के लिये की थी।

नारायण शर्मा—नाहरकटिया : क्या लोग सच कहते हैं कि 'सबसे बड़ा रुपैया?'

उ० : जी नहीं नारायण भैया। सबसे बड़ा है वह छोटा रुपैया जो हर सप्ताह आपकी जेब से उछल कर हमारी जेब में आ जाता है। एक-एक हजार और दस-दस हजार के बड़े नोटों की हालत तो आप देख ही [illegible] हैं। आज मूंगफली की पुड़िया बनाने के भी नहीं आते।

बाबूलाल जैन—भीलवाड़ा : यदि हम [illegible] को गृहमंत्री बनाकर दीवाना में पत्रों [illegible] उत्तर देने से रोक दें तो?

उ० : तो हम 'त्याग पत्र' दे देंगे। 'पत्र' का शब्द आ जाए वहां भला हम अ[illegible] कमाल दिखाने से कब चूकने वाले हैं। तो आपके 'मानपत्र' चाहियें।

तहसीनुद्दीन, सुरेन्द्र कुमार मिश्र—आ[illegible]बाद : डीयर अंकल, अगर हम आपसे [illegible] की सुन्दरता के बारे में कुछ पूछें तो आप बतायेंगे?

उ० : बता तो देंगे, पर हमारा बुरा [illegible] जाएगा। क्योंकि इसके बाद ट्रकों [illegible] अपने ट्रक के आगे और पीछे जहाँ [illegible] लटकाते हैं वहां हमारी तस्वीर लटका[illegible] करेंगे और नीचे लिखेंगे, 'बुरी नजर [illegible] तेरा मुंह काला।'

सुरेश जगजीत, अशरफ—मुंगेर : मेरे [illegible] कुछ मित्रों ने मिलकर यहाँ दीवाना क्ल[illegible] स्थापित की है। हमारा उद्देश्य है कि दीवा[illegible] को अधिक से अधिक रोचक बनाया जाये [illegible] इसके लिए हम आपको समय-समय [illegible] अपने विचारों से अवगत करायेंगे त[illegible] दीवाना को अधिक-से-अधिक रोचक बना[illegible] के लिए अपने सुझाव भेजेंगे। क्या आ[illegible] हमारे सुझावों की ओर ध्यान देंगे?

उ० : अवश्य ध्यान देंगे। बल्कि हमारी त[illegible] हार्दिक इच्छा है कि ऐसे दीवाना क्लब छो[illegible] बड़े नगरों में स्थापित हों। जिनमें वे अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम चलायें और सब दीवाना क्लबों में ऐसा ताल-मेल हो कि वे सब मिल कर एक बड़ा परिवार बन जायें। आप अपने क्लब की मीटिंगें कीजिए। क्लब के सदस्यों के नाम और अपने सुझाव हमें भेजिये।

***

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

बन्द करो बकवास, अगर बोलने भी नहीं देना था तो लाइब्रेरी में मिलने के लिए क्यों बुलाया ?

दशरथ ने कोठी का नम्बर देखकर टैक्सी रुकवा ली और टैक्सी से उतरकर फाटक के पास आया···पहले उसने एक गहरी दृष्टि से कोठी के बाहर के भाग का निरीक्षण किया···कोठी का लॉन बिल्कुल सूखा पड़ा था···थोड़ी-सी घास छोड़कर कोई पौधा हरा नहीं दिखाई दे रहा था···सामने का बरामदा सुनसान पड़ा था। उसकी दीवार का प्लास्टर कई स्थानों से उखड़ा हुआ था। फाटक जंग लगने के कारण काला-सा पड़ गया था···लगता वर्षों से खोला नहीं गया···फाटक के बाईं ओर एक पत्थर पर खुदा था, 'रचना सदन'।

दशरथ ने जेब टटोलकर एक पुरानी जंग खाई चाबी निकाली और ताले को पकड़ कर उसे ऊपर उठाने का प्रयत्न किया···किन्तु ताले का कुण्डा फाटक के कुण्डे से कुछ इस प्रकार जकड़ गया था कि ताला बड़ी कठिनाई से टेढ़ा हो सका और साथ ही चराहट की भी आवाज आई। दशरथ ने चाबी ताले के छेद में डाली···तब तक ड्राईवर उसके पास आ गया और बोला—

'साहब! लगता है बरसों से इस ताले को खोला नहीं गया।'

'हूँ···।' दशरथ ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

दशरथ चाबी को घुमाने के लिए बल लगाने लगा किन्तु चाबी हिली तक नहीं··· दशरथ के हाथों पर भी जंग लग गई···खरोंचें भी पड़ गईं। टैक्सीड्राईवर ने कहा—

'मुझे दीजिए साहब···मैं प्रयत्न करता हूँ।'

दशरथ एक ओर हटकर खड़ा हो गया और जेब से रूमाल निकालकर हाथों की जंग पोंछने लगा···हाथ में एक स्थान पर थोड़ा खून निकल आया था जिसमें कुछ मिर्चें-सी लगने लगी थीं···दशरथ ने रूमाल से खून पोंछा। ड्राईवर ने भी पूरा बल लगा कर देख लिया था किन्तु वह भी ताला खोलने में सफल नहीं हो सका था। उसने निराश होते हुए दशरथ से कहा—

'साहब! यह ताला बिना तेल दिए नहीं खुलेगा।'

'हाँ···बहुत जंग लगी हुई है।'

दशरथ ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई और कुछ ठिठक गया, पड़ौस की कोठियों के फाटकों और दीवारों पर उसे कई लोग दिखाई दिए जो दशरथ को इस प्रकार देख रहे थे जैसे वह दूसरी दुनिया का कोई आदमी हो। ड्राईवर ने दशरथ से कहा—

'साहब किसी पड़ौसी से तेल लेने का प्रबन्ध कीजिए वरना यह ताला तो खुलने से रहा।'

दशरथ ने एक बार फिर पड़ौसियों का पर्यवेक्षण किया लेकिन उसे ऐसी कोई सूरत दिखाई नहीं दी जिससे वह थोड़ा तेल मांग सकता। अचानक, दशरथ की दृष्टि एक छोटी-सी कोठी के फाटक के पास खड़े हुए एक बूढ़े पर रुक गई। बूढ़ा पुराने ढंग का काला सूट पहने था···उसकी अपनी रंगत और सूट की रंगत में बहुत कम अंतर था···उसकी खोपड़ी के किनारों पर के बाल सफेद रंग के थे और बीच में से बिल्कुल सफाचट था···उसके दाँतों में मोटा-सा हाथी दाँत का पाईप था लेकिन पाईप में से धुआं नहीं उठ रहा था। वह अपनी ढीली-ढाली पतलून की दोनों जेबों में हाथ डाले खड़ा चुपचाप दशरथ को घूर रहा था···चश्मे के पीछे झांकती लाल-लाल आंखें धुआं लगी-सी प्रतीत हो रही थीं।

दशरथ ने उस बूढ़े को अपनी ओर बढ़ते देखा और साथ ही एक सीटी जैसी तेज और पतली आवाज उसके कानों से टकराई···

'डैडी—ओह वो···डैडी।'

अनायास दशरथ की दृष्टि उस आवाज की ओर उठ गई। उस कोठी के कम्पाउंड की दीवार पर बैठी एक बीरबहूटी हाथ हिला कर चिल्लाई थी। उसे देखकर बीरबहूटी ही की कल्पना की जा सकती थी क्योंकि उसके बदन पर गहरा लाल पुलओवर···गहरी लाल जीन···सिर पर उसी रंग की फुन्दने वाली लाल ऊनी टोपी थी···पैरों में भी उसने लाल ही रंग के जूते पहन रखे थे —उसके गले में दूरबीन लटक रही थी।

लड़की की आवाज पर बूढ़ा ठिठककर फौजी ढंग में वहीं अटैनशन हो गया था··· लेकिन बिना लड़की की ओर देखे वह क्रोधित स्वर में बोला—

'व्हाट इज़ दिस नानसैंस बेबी···यू नो ···कदम बढ़ाने वाले को कभी टोकना नहीं चाहिए।'

लड़की ने दीवार पर से छलांग लगाई और दौड़ती हुई बूढ़े के पास आई···उसका कंधा पकड़कर हाँफती हुई आवाज में बोली···

'डोंट बी सिल्ली डैड···मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी।'

'ओ बेबी···मैं डाक्टर हूं···यू नो··· डाक्टर किसी को मरते नहीं देख सकता।'

'ओह डैडी···कभी-कभी रोगी स्वयं भी तो डाक्टर के पास आता है।'

'यू आर ऐक्सट्रीमली राइट···'

बूढ़े ने दशरथ की ओर देखा और हाथ से उसे अपनी ओर आने का संकेत किया। दशरथ अब तक की सारी कार्यवाही आश्चर्य से देख और सुन रहा था। टैक्सी ड्राइवर एक बार फिर ताले से उलझ गया था। दशरथ बूढ़े की ओर बढ़ने लगा तो वह बीरबहूटी बेबी ऐसी भयभीत नजरों से दशरथ की ओर देखने लगी मानों वह कोई भूत हो···फिर एकाएक दीवार से उतरकर अपनी कोठी की ओर भागने लगी। दशरथ बूढ़े के पास पहुंच गया। लड़की दूसरी ओर जाकर दीवार के पीछे से गर्दन निकाल कर दूरबीन से दशरथ को देखने लगी। दशरथ ने बूढ़े को बड़ी शिष्टता से सम्बोधित किया···

'जी हाँ कहिए···आपने बुलाया था!'

'नए-नए आए हो यहां?'

'जी हाँ—।'

'क्या नाम है?

'दशरथ।'

'कहाँ के रहने वाले हो ?'

'जी···आगरा से आया हूं।'

'क्यों आए हो आगरा से ?'

'जी—यहाँ एक फर्म में मेरा ऐप्वांइटमैंट हुआ है।'

'किस फर्म में ?'

'जवाहर टूल्ज फैक्टरी···मुझे वहाँ इन्जीनियर के रूप में काम मिला है।'

'गुड—बूढ़े ने बुझे हुए पाइप का कश लिया और बोला—

'बम्बई पहली बार आए हो ?'

'जी हाँ—पहले कभी नहीं आया।'

'यह कोठी तुम्हें कैसे मिली ?'

'जी···मैं होस्टल में ठहरा था···हमारी फर्म के एक असिस्टेंट मैनेजर हैं मिस्टर भंवर लाल···उन्होंने बताया कि उनकी एक कोठी बड़े समय से खाली पड़ी हुई है···वह स्वयं फर्म के पास एक फ्लैट में रहते हैं—उन्होंने बिना किसी पगड़ी के अपनी कोठी मुझे किराये पर देना स्वीकार कर लिया है···किराया केवल तीन सौ रुपये महीना।'

'हूं—तुम्हें मालूम है बम्बई में अगर पैर रखने को भी स्थान की आवश्यकता हो तो उसके लिए हजारों रुपये पगड़ी या डिपॉजिट के देने पड़ते हैं।'

'जी हां···मालूम है—'

'और इतनी बड़ी कोठी तुम्हें बिना पगड़ी या डिपॉजिट के मिल गई···और वह भी केवल तीन सौ रुपये महीना पर।'

'जी हाँ—'

'तुम्हारे घर में और कौन-कौन हैं ?'

'जी—केवल एक बूढ़ी माँ।'

'हूं—और उनकी देखभाल का उत्तरदायित्व भी तुम पर है।'

'जी हाँ—।'

'और तुम चाहते हो कि वह बेसहारा हो जायें।'

'जी—!' दशरथ ने आश्चर्य से कहा, 'मैं समझा नहीं।'

बूढ़े ने ध्यान से दशरथ को देखा और बोला—

'यूं तो बम्बई में तिल धरने को भी खाली स्थान कहीं नहीं—और यह इतनी बड़ी कोठी बरसों से खाली पड़ी हुई है···तुम्हें मालूम है इसका क्या कारण है !'

'जी नहीं—।'

'तुम्हें कोठी के मालिक मिस्टर भंवर लाल ने भी नहीं बताया ?'

'जी नहीं—।'

'इस कोठी में एक प्रेत आत्मा रहती है।'

'प्रेत आत्मा···!' दशरथ ने आश्चर्य से दोहराया।

'हां—प्रेत आत्मा।'

बूढ़े ने इस प्रकार कमर पर हाथ रख कर कहा था जैसे उसने दशरथ को अत्याधिक विस्मय में डाल देने वाली कोई सूचना दी हो, जिसे सुन कर दशरथ के चेहरे की रंगत उड़ जाएगी और वह डर कर पीछे हट जाएगा···लेकिन इसके विपरीत दशरथ के होंठों पर व्यंग्यात्मक मुस्कराहट फैल गई और वह बिना किसी घबराहट के बोला—

'क्या सचमुच यहाँ प्रेत आत्मा रहती है ?'

'अरे—!' बूढ़ा क्रोध से बोला, 'तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं ? मैं एक मिलिट्री का रिटायर्ड डाक्टर हूं···यू नो···।'

'अनोखी बात है—आप एक फौजी होकर भी भूतों-प्रेतों में विश्वास रखते हैं।' दशरथ ने मुस्करा कर कहा।

'नहीं रखता था···पर रखने पर विवश हो गया···यू नो !'

इस बीच में दो-एक और पड़ोसी भी सरकते-सरकते उन लोगों के पास आ गए थे। सभी दशरथ को आश्चर्य से देख रहे थे दशरथ ने मुस्करा कर बूढ़े से पूछा—

'क्या आपने उस प्रेत आत्मा को अपनी आंखों से देखा है—?'

'हांय···! अरे नहीं देखता तो विश्वास कैसे करता !'

'क्या देखा था आपने ?' दशरथ ने रुचि लेते हुए कहा।

'अरे···प्रेत आत्मा तो देखा था··· यू नो।'

एक पड़ोसी ने खखारकर गला साफ किया और दशरथ चौंक कर उसकी ओर आकृष्ट हो गया। उस व्यक्ति ने ध्यानपूर्वक दशरथ को देखा और बोला—

'श्रीमान्···कर्नल साहब ठीक कहते हैं।'

'सुन लिया तुमने ?' बूढ़े ने अपना समर्थन पाकर कहा।

दशरथ ने उस व्यक्ति से पूछा—

'क्या आपने भी अपनी आँखों से देखा है ?'

'जी हाँ श्रीमान्···मैंने ही नहीं यहां लगभग सभी पड़ोसियों ने देखा है।'—फिर उस व्यक्ति ने एक और पड़ोसी की ओर देख कर कहा, 'क्यों दावर साहब···मैं झूठ तो नहीं कह रहा ?'

'जी नहीं—' दावर साहब ने कहा, 'मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है।'

फिर एक और पड़ोसी बोला—

'मैंने भी अपनी आंखों से देखा है।'

'मैंने भी देखा है।'

आस-पास खड़े सभी पड़ोसियों ने कर्नल की बात का समर्थन किया। एक पड़ोसी ने कहा—

'आपको भंवर लाल ने मूर्ख बनाया है···श्रीमान्।'

'कुछ डिपॉजिट तो लिया होगा !'

'केवल तीन महीने का एडवांस किराया।'

'बस···तो भूल जाइए वह किराया।'

'अच्छा होगा कि आप उसी होस्टिल में ठहरे रहें।'

'यहां आकर जीवन को खतरे में डालने से क्या लाभ ?'

शेष पृष्ठ ३१ पर

हार गयी ? ही दो और विधानसभा उपचुनाव भी हार गई । यह वक्त बैठे रहने का नहीं है । उठो और कूद पड़ो मैदान में ?
चूहे तू बेकार में हमें राजनीति में मत घसीटा कर, कोई जीते कोई हारे इससे हमें क्या ?
जनता पार्टी ही आजमगढ़ में जीत जाती 'तो हमें कौन-सा हलुवा मिलता ।
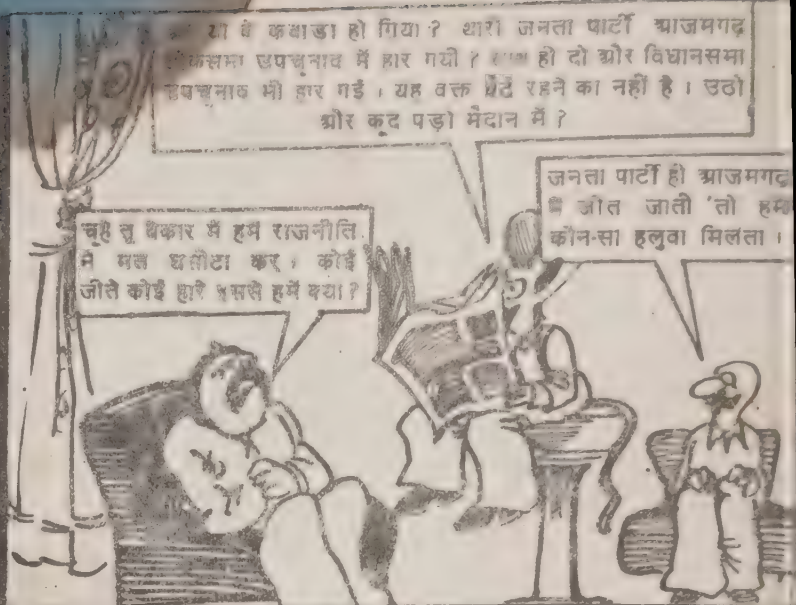
हद हो गई ! थम अपनी जिम्मेवारी से इब मुकरने लगे ? याद नहीं है १९७७ के लोकसभा चुनावों में तुमने कितनी घनघोर मेहनत करके जनता पार्टी को जिताया था । जनता पार्टी के लिये वोट थमने अपने पल्लू फैला कर मांगे थे । लोगों को क्या-क्या वायदे दिये थे थमने ! भूल गिये ? अगर जनता सरकार टूटती है तो पब्लिक थमसे जवाब मांगेगी । अरे भई, जनता पार्टी में गड़बड़ी आने का कारण ही यही है कि थारे जैसे असली सच्चे तपे हुए नेता तो पार्टी से नाता तोड़ घर बैठ गये । पार्टी में रह गिये सक्रिय सिर्फ कुर्सी के पीछे दौड़ने वाले । फिर थम ही मुझे बताओ कि पार्टी में फूट नहीं बढ़ेगी ? आपस में मारपीट नहीं होगी ? किसी भी वक्त पार्टी के टुकड़े टुकड़े हो सकते हैं और तानाशाही की ताकतें दोबारा सत्ता में आ सकती हैं । जागो मेरे लाल मोहन प्यारे, अभी भी वक्त है ।
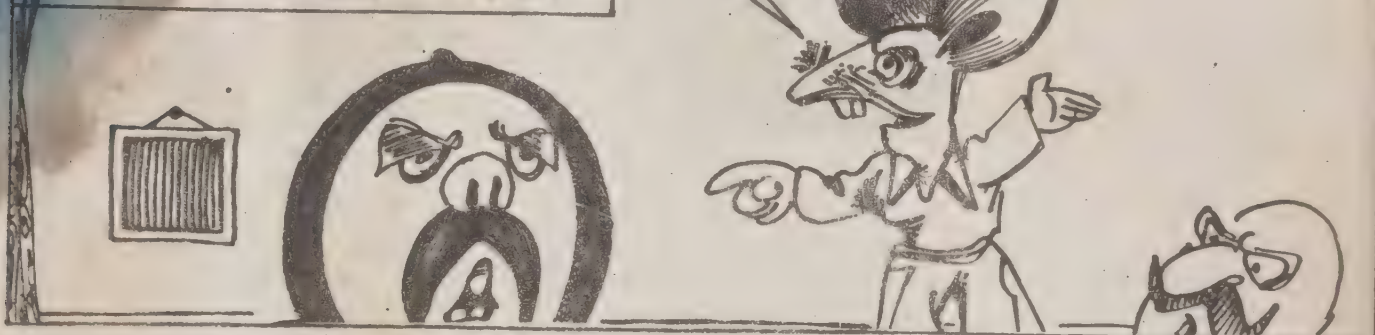
थमको काम की तो कोई फिक्र नहीं है । जासूस कम्पनी का दफ्तर मिस रूबी सम्भाल रही है । थमको बस महीने में एक-दो बार ही दफ्तर जाने की जरूरत पड़ती है । थमारे पास इतना फ्री टायम है । इस टायम को पार्टी के काम में लगाओ ।
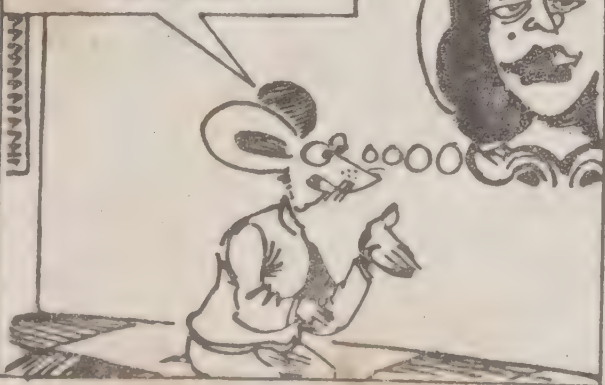
गफलत में मत पड़े रहो, इस वक्त जनता पार्टी को थमारे जैसे ईमानदार वरिष्ठ नेताओं की सेवाओं की ग्रेफाइट स्टोन जितनी सख्त जरूरत है । थारे हरयाणा का ही देखो, देवीलाल के सिर में ३७२ सफेद बाल थे ; परसों की गणना से पता लगा है कि सफेद बालों की संख्या बढ़ कर १८४७९½ हो गई है ।
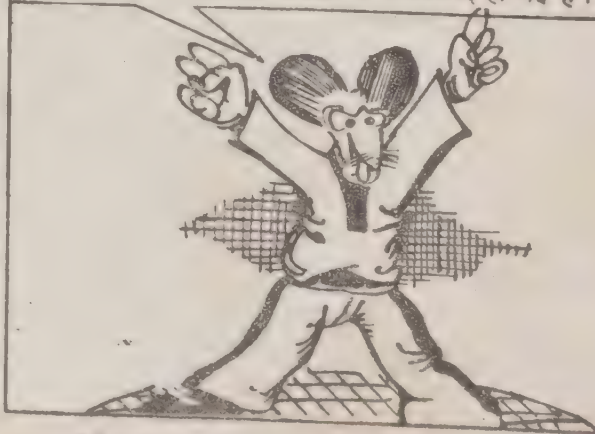
जनता पार्टी टूटने के भयकर परिणाम होंगे। को टूटने से तीन ही आदमी बचा सकते हैं।
लोक नायक श्री जय प्रकाश नारायण।
जयप्रकाश जी स्वास्थ्य खराब होने के कारण इस काम को करने में असमर्थ हैं। अब थम दो ही बचे हो। थम भी अपनी बनाई पार्टी से इस तरह किनारा करने लग गो बोलो कैसे काम चलेगा ?
तीसरा कौन आ गया हमारे बीच में ?
जैप्रकाश नारायण? नाम तो सुना-सुना सा लगता है।
अच्छा हालत इतनी बुरी हो गई है? हम अच्छी तरियों नही पढते हैं भई और आकाशवाणी से जो समाचार आते हैं उनमें इंग्रेजी के सख्त शब्द होते हैं जो म्हारी समझ में नहीं आते।
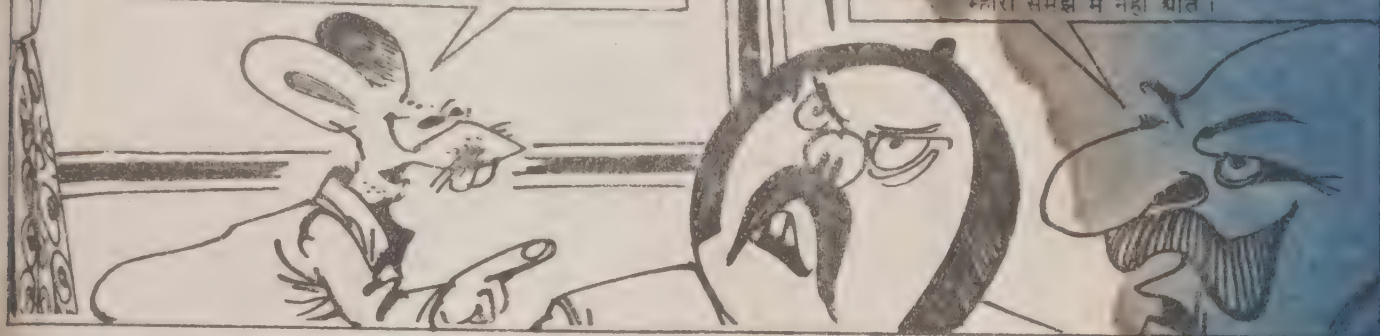
इब जरा-जरा सी बात म्हारी समझ मां आ रही है। अगर हमको यह बातें पहले ही बताई होतीं तो हम कभी के जनता पार्टी की सारी मुश्किलों को हल कर चुके होते। खैर अब भी कोई देर नहीं हुयी है! इट इज नेवर टू लेट।

अब हमने जनता पार्टी में एकता लाने का काम अपने हाथ में लिया है तो देखना जब हम अपने फार्मूले लेकर आयेंगे तो जनता पार्टी की फूट ऐसे ही गायब हो जायेगी जैसे गधे के सिर से सींग।

हिन्दुस्तान वालों खुशियां मनाओ, सिलबिल और पिलपिल जनता पार्टी को ठीक रास्ते पर लाने के लिये राजी हो गये हैं। एक ही हफ्ते में जनता पार्टी के छः टुकड़ों को ये अपने फेवीकोल से जोड़ कर आपके सामने रख देंगे।
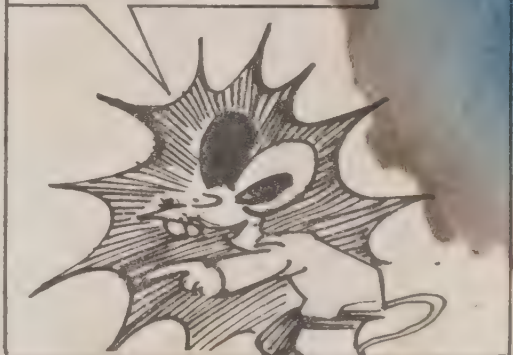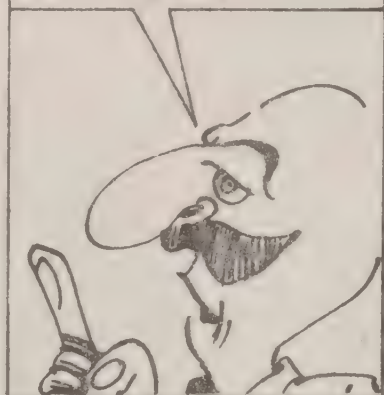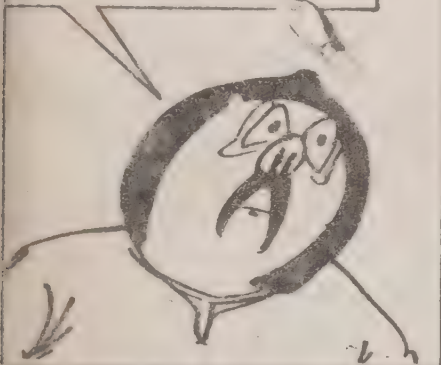
हमें बस फार्मूला सोच निकालने में थोड़ा सा टैम लगेगा और सोचने के हमारे जरा अपने ही ढंग के तरीके हैं। मुझे सोचते समय तम्बाकू वाले चार पान मुँह में डाल कर चबाने की आदत है। तम्बाकू से दिमाग की नसें जाग जाती हैं। आइडियाज के लिये टू वे ट्रैफिक तैयार हो जाता है।
और मुझे पैप पीने की आदत है। पैप मेरे दिमाग की फैक्ट्री की चिमनी का काम करती है। जितनी जोर का धुआं उड़ रहा होगा उतने ही जोर से दिमाग चल रहा होगा।
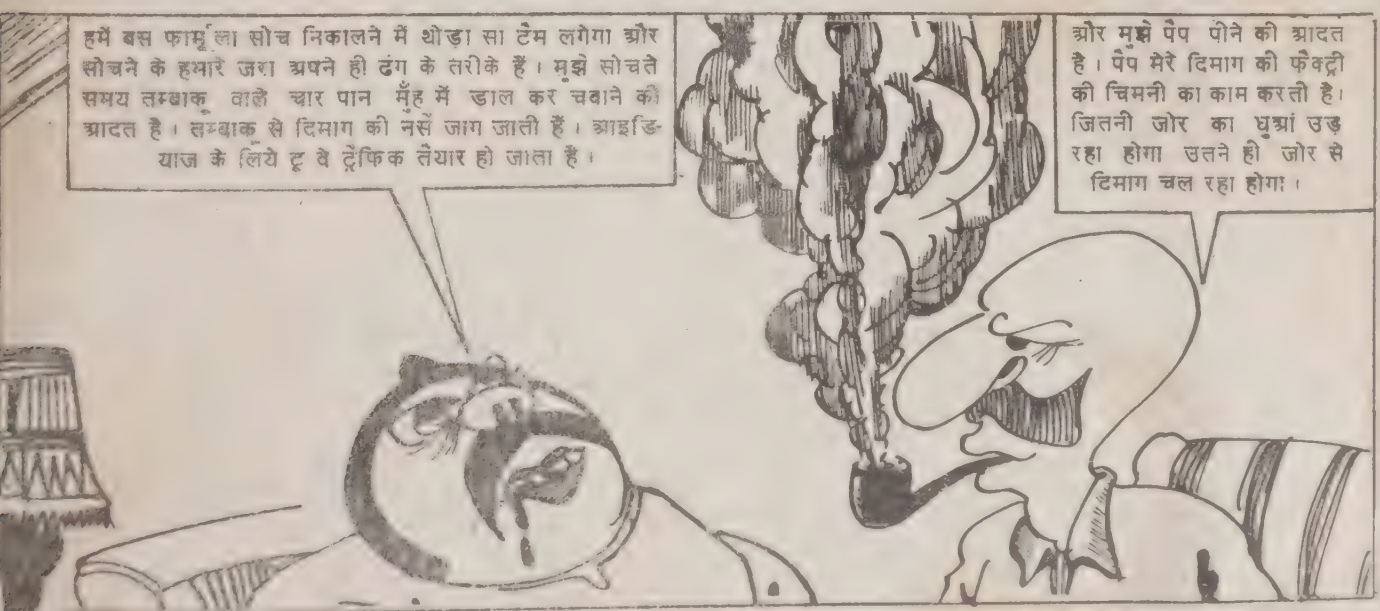
एक ड्रम में पान के बीड़े और
मैंने।

इतना ही नहीं मैं दरवाजे पर टॉमीगन लेकर पहरा देत
मुझे पता है कि कांग्रेस आई के वर्करों को पता लग ग
वह जरूर इनको डिस्टर्ब करने के लिये यहां आकर नारे
येंगे। खबरदार ऐसा करने की जुर्रत न करना। इस मका
एक फलांग के आसपास जो कोई आयेगा उसकी मैं गो
से धज्जियां उड़ा कर रख दूंगा। खबरदार! यह शाह क
का दफ्तर नहीं है, हुड़दंग मचाने के लिये।

विचारों में खोये गिलगिल के मुँह से पान की पीक गिर कर कुर्ते पर से होती हुई सोफे पर मार्ग सूचक अंक छोड़ते हुए कार्पेट पर गिर रही है।
सीमेंट
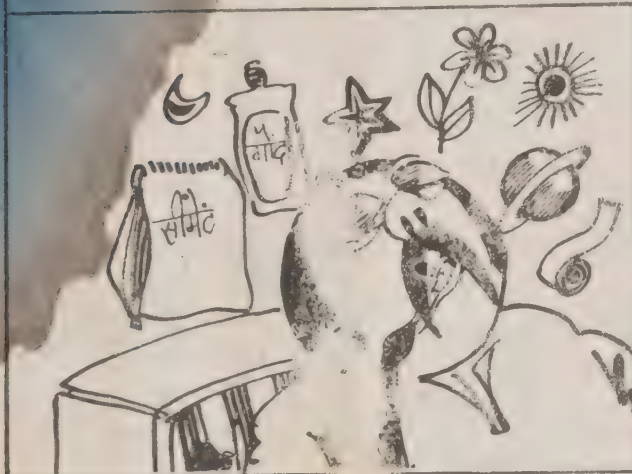
अरे बनारसी पत्ते के ताऊ, तू यह क्या कर रिया है? यह सोचने का तरीका है। सोफे का जो सत्यानाश मारा वह तो मारा ही चार हजार रुपये के कालीन का कबाड़ा करके रख दिया। पान बहुत से लोग खाते हैं लेकिन इस तरह पहाड़ी बकरी की तरह कोई नहीं खाता होगा।
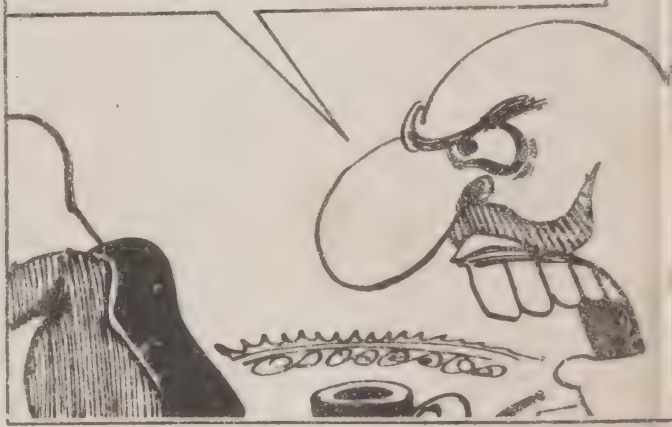
ऐह! ऐन ऐसे मौके पर
जब मेरे दिमाग के बगीचे में
रूपी गधा चरने के लिए
वाला था, भगा दिया उसे
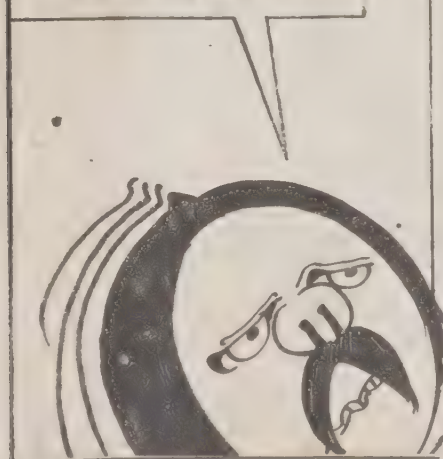
यह भाई रोज मुझे इसी तरह झाड़ता है जैसे कि मैं इसका नौकर हूं। यह समझता क्या है अपने आपको? बहुत बड़ा फन्ने खां समझता है। मैं दबता हूं न इसीलिये हांSSSS।
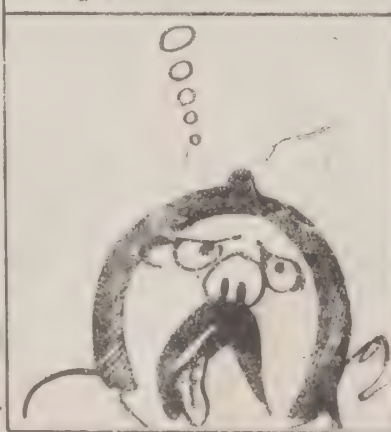
मुझे दबना नहीं चाहिए। मैं तो इसकी गंजी खोपड़ी देख इसको बड़ा भाई मानता आ रहा हूं। लेकिन यह कुछ और ही समझता है। इसे भी जरा अपने नजारे दिखा दूं मैं। मेरे तेवर नहीं देखे इसने।

सिलबिल-पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

[illegible] की छुट्टियां हुईं और मैंने इन- [illegible] हमारी प्यारी पत्रिका 'दीवाना' का, और इसी इन्तजार में दीवाना का अंक १८ मिला। हास्य व्यंग की अनूठी [illegible] व साथ में हमारे प्रिय जोकरों (मोटू पतलू) की धमाकेदार चित्र कथा ने तो हमाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, धारावाहिक उपन्यास मोनिका काफी रोचक उपन्यास है, [illegible] बकवास व परोपकारी भी इस बार काफी रोचक लगे। काफी समय के बाद 'दीवाना कार्ड' मिला जो विशेष रूप से पसन्द आया। मेरी नजर में दीवाना ही एक मात्र ऐसी पत्रिका है जो पाठकों को शुद्ध हास्य के साथ-साथ सही मनोरंजन भी प्रदान करती है। आपसे अनुरोध है कि दीवाना में 'समाचार पन्ना' भी प्रकाशित किया करें।

एस॰ मन्जुर हसन 'कादरी'—बीकानेर

मैं दीवाना पढ़ने के लिए इस पत्रिका का नियमित पाठक बन गया हूं। आपके द्वारा प्रकाशित दीवाना अंक १६ प्राप्त हुआ, पढ़ कर अत्यन्त ही हर्ष हुआ कि दीवाना समस्त मनोरंजन से भरपूर है। इसमें प्रकाशित मोनिका भाग ६ काफी रोचक लगा वैसे मोनिका का पिछले २ भाग मैं नहीं पढ़ पाया हूं। छुट्टन-मिट्ठन और झमूरा शीर्षक भी काफी रोचक लगा। आशा करता हूं कि आप मुझे इसी तरह से अपनी पत्रिका द्वारा भरपूर मनोरंजन कराते रहेंगे।

गोविन्द दास राठी 'स्नेही'—रायपुर

हंसी एवं मजाक एवं अनेक प्रकार के हास्यव्यंग से परिपूर्ण मुस्कराता हुआ दीवाना एक उच्च स्थान प्राप्त करता चला जा रहा है। यह इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसके लिए मेरे पास कुछ शब्द ही नहीं हैं। यही सोचता हूं कि किस तरह से वर्णन करूं, अनेक पत्रिका पढ़ता हूं। जितना इसमें मजा आता है उतना और किसी में नहीं, न जाने इसमें कौन सी चुम्बक लगी हुई है जो सभी को अपनी

आपके पत्र

तरफ खींच लिया करती है। अनेकों प्रकार की कहानी एवं फिल्मों के बारे में यह ज्ञान करवाता है।

प्रदीप कुमार मिश्रा—काशीपुर

दीवाना का अंक १८ बहुत ही पसन्द आया। लेकिन 'चिल्ली लीला' पढ़कर दिल दुखी हो गया क्योंकि इस बार चिल्ली के नुस्खे ने बेचारे एक गरीब आदमी की जान ले ली। कृपया चिल्ली लीला में चिल्ली के अच्छे करम ही दिया करें।

फिल्म पैरोडी अनन्त आश्रम बनाम 'आनन्द आश्रम' पढ़कर सचमुच आनन्द आ गया। 'जानवरों के दीवाने सन्देश' ने हंसा-हंसाकर दीवाना बना दिया। 'पंचतंत्र' बहुत ही पसन्द आया। पंचतंत्र के लेखक को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई !

इस अंक की अन्य सामग्री बहुत ही रोचक और हास्यपूर्ण थी।

'सनम'—वसन्त विहार

दीवाना का अंक १६ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर वाकई चिल्ली सच कहता है। कि लाइट ठीक नहीं आती है। इस अंक में भी अन्य अंकों की तरह रोचकता और मनोरंजकता थी। खासकर सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, सवाल यह है और "कहावतों पर दीवाना सोच विचार" बहुत अच्छे लगे। फिल्मी तर्ज पर एक कहानी और हेमा-मालिनी पर लेख बहुत ही अच्छे लगे। कृपया बतायें कि हमारे यहां भटिण्डा में दीवाना एक महीना यानि चार अंक क्यों नहीं भेजे। अब आप ही बतायें हम वह चार अंक कहां से प्राप्त करें।

अवतार सिंह—भटिण्डा

यह बात तो आप अपने एजेन्ट से पूछिये। —सं॰

हास्य व ज्ञानवर्द्धक पत्रिका 'दीवाना' के अंक १६ का मुखपृष्ठ इतना आकर्षक लगा कि १५ मिनट तक देखता ही रहा। 'चिल्ली लीला' में पुरानी पैन्टों का उपयोग बहुत ही सुन्दर ढंग से बताया गया है। 'आधा आधी राख' बनाम 'आधा दिन आधी र[ात]' फिल्म पैरोडी बहुत ही मनोरंजक लग[ी]। 'फिल्मी तर्ज पर एक कहानी' बहुत ही प[सन्द] आई। 'मदहोश' व पंचतंत्र' पत्रिका में प्र[ि] विशेष स्थान बनाए हुए हैं। उपन्[यास] 'मोनिका' बहुत ही अच्छा लगा है ! संगीता को मेरी ओर से बधाई व बहुत-ब[हुत] शुभ कामनाएँ ! मैंने हेमामालिनी का [...] काटकर भेज दिया है क्या वह अपना फ[ोटो] भेजेंगी

राजेश भुठानी—रिव[...]

यह तो आप हेमा मालिनी से पूछिये। —[...]

आपके दीवाना की जितनी तारीफ [की] जाये उतनी ही कम है। अतः मैं संक्षेप [में] लिखता हूं। अंक १७ प्राप्त हुआ। दीवाना तो सब पत्रिकाओं को पराजित [कर] आगे बढ़ा जा रहा है। इस अंक में चिल्[ली] लीला २२२, बिजली के झटके, संगीता द्वा[रा] लिखित मोनिका, मोटू-पतलू, छुट्टन-मिट्ठ[न] बच्चा झमूरा, फैण्टम, पंचतंत्र, टैक्स [...] दीवाने रूप, मदहोश आदि रोचक रहा। पिलपिल-सिलबिल सामान्य रहे, परन्तु फि[ल्म] तौंसवी लिखित 'नाम नहीं सूझा' अति रोच[क] रही। आपसे प्रार्थना है कि 'गुमनाम है को[ई]' प्रत्येक अंक में दें तथा अमिताभ बच्चन [पर] लेख अवश्य प्रकाशित करें।

मानव कुमार—कानपु[र]

मेरी प्रार्थना आपने स्वीकार कर ही ल[ी]। अंगुठानन्द को देखने की काफी दिनों से इच्छा थी और उसे देखकर मैं फूला न समाया। वास्तव में अंक १६ ही सब अंकों से कु[छ] अलग से नवीनता लिए प्रतीत हुआ। फिल[्म] पैरोडी बेहद ही अच्छी थी। कृपया इ[से] भविष्य में चालू रखें। कृपया फिल्मी त[र्ज] पर कहानी हर अंक में छापें।

पुनित अग्रवाल—आग[रा]

मोटू-पतलू

पिछले दिनों चम्बल घाटी के झांजर डाकू ने एक बस का अपहरण कर लिया था । उस बस में मोटू-पतलू, घसीटाराम, चेलाराम और डा० झटका भी सवार थे । यात्रियों में सुमन नाम की एक लड़की थी और उसके पिता थे । लड़की के पर्स में से डाकुओं के हाथ एक पत्र लगा था । जो पवन नाम के एक लड़के को उसके पिता ने लिखा था । पत्र से पता चलता था कि बहुत सा सोना और बड़ा खजाना पवन के पिता के हाथ लगा है । डाकू वह सोना लूटना चाहते थे पर पत्र में पवन के पिता का पता नहीं था । सुमन पवन को जानती थी । डाकुओं ने सुमन के पिता सहित सब यात्रियों को एक पेड़ से बांध दिया और सुमन को मजबूर किया कि यदि वह पवन को डाकुओं के घेरे में न लाई तो उन सब को गोली से उड़ा दिया जाएगा । सुमन पवन को बुला कर लाई तो उसे भी यही धमकी देकर झांजर डाकू ने उसे अपने पिता के पास लेकर चलने को कहा और अपना शुभ चिंतक समझ कर उन्होंने चेलाराम को अपने साथ ले लिया । इससे पहले झांजर डाकू ने चेलाराम की जेब से अंगूठा नन्द को निकाल कर अपनी जेब में डाल लिया था । पवन डाकू को साथ लेकर अपने पिता के घर पहुंचा तो वहां मौका पाकर अंगूठा नन्द ने डाकू पर गोली चला दी···

पिस्तौल अब झांझर डाकू के कब्जे में थी और उसने अंगूठा नन्द का निशाना बना लिया ।

गोली चाय के कप में लगी और अंगूठा नन्द बाल-बाल बच गया ।
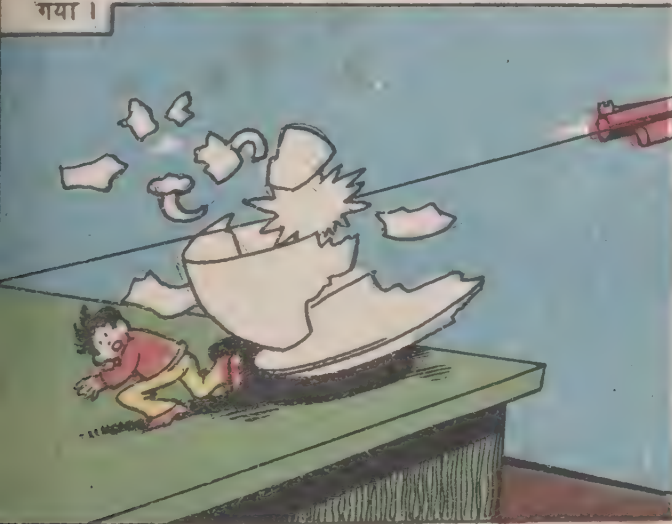
अंगूठा नन्द ने जान बचाने के लिए अब खिड़की पर छलांग लगा दी और दूसरा निशाना भी चूक गया । पर यह गोली बाहर उस खम्बे में जा लगी जहां डाकू का घोड़ा बंधा हुआ था ।
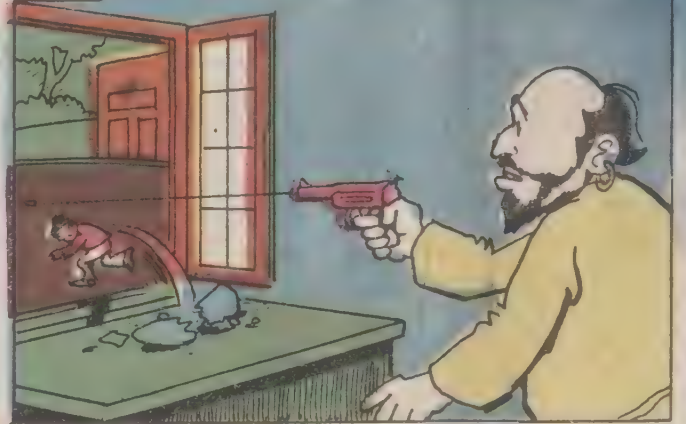
खम्बा टूटने से घोड़े की लगाम टूट गई और गोलियों की आवाज से वह बिदक गया । अब तक जान बचाता हुआ अंगूठा नन्द भी घोड़े की लगाम तक पहुंच गया था ।
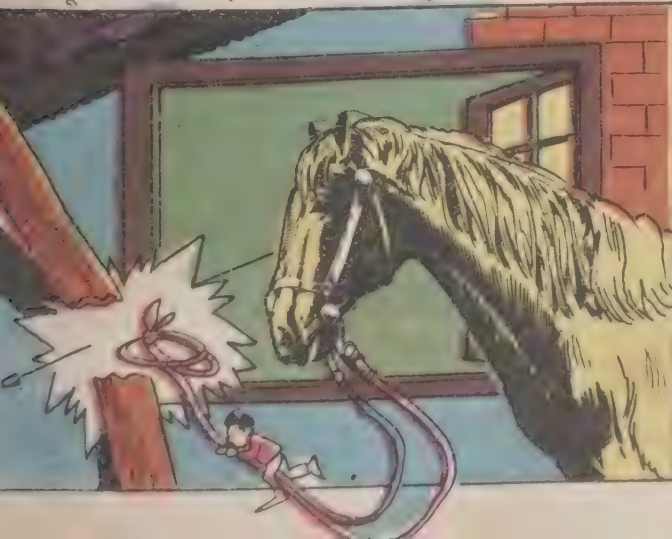
मेरा घोड़ा भाग गया । और वह चूहे के बराबर का लड़का कहां गया ? उसे तो मैं जिंदा नहीं छोड़ूंगा ।

वाला हाथ झपट्टा मार
कर पकड़ लिया ।

गोली सीधी छत पर लगी और छत की ईंट अपनी जगह से सरक गई ।

एक ईंट सीधी आंजर डाकू के सिर पर लगी जिसने उसे अधमरा कर दिया ।

इसका मतलब है यह डाकू है और तुम्हें जबरदस्ती यहां लाया है ।
इसका तो हो गया कल्याण ।
हां इसने कुछ लोगों को बंदी बना कर मुझे अपने साथ यहां आने पर मजबूर किया था ।
इसे पुलिस के हवाले कर दो ।
नहीं । इस तरह तो बात बिगड़ जाएगी । यह तो अब हमसे बच कर कहां भागेगा । पर इसके और साथी जंगल में कुछ आदमियों को बंदी बनाये हुए हैं । पुलिस वहां पहुंची तो हो सकता है अपनी जान की परवाह न करते हुये वे बस के यात्रियों को गोली से उड़ा दें ।
और यह भी हो सकता है कि पुलिस के वहां पहुंचने और यात्रियों के मरने के बाद भी वे हाथ न आयें और किसी खुफिया रास्ते से भाग जायें ।
वह जंगल बहुत घना है । डाकुओं को अवश्य ही जंगल के सब चोर रास्ते मालूम होंगे ।
उन्हें काबू में करने के लिये हमें कोई और तरकीब सोचनी चाहिये ।

घोड़े को जंगल के सब रास्ते मालूम थे । और वह तेजी से अपने ठिकाने की ओर भागा जा रहा था ।
और अंगूठा नन्द उसकी लगाम से चिपटा हुआ था ।

घोड़ा जरूर अपने ठिकाने पर वहीं जाएगा जहां यात्री पेड़ से बंधे हुये हैं । डाकुओं को चकमा देने की कोई तरकीब सोचनी चाहिये ।

तभी अंगूठानन्द ने देखा दो आदमी एक सुरंग में से निकल रहे थे।

उनके कपड़ों से अंगूठा नन्द ने अनुमान लगा लिया कि वे कोई कैदी थे। पास ही जेल की ऊँची चार दीवार थी जिससे यह समझना मुश्किल नहीं था कि वे कैदी सुरंग खोद कर जेल से भाग रहे थे।

इस घटना ने अंगूठा नन्द के छोटे से दिमाग में एक बड़ी योजना का ढांचा खड़ा कर दिया। घोड़ा उसके अनुमान के अनुसार वहीं पहुंचा था जहां डाकुओं ने यात्रियों को पेड़ से बांधा हुआ था।
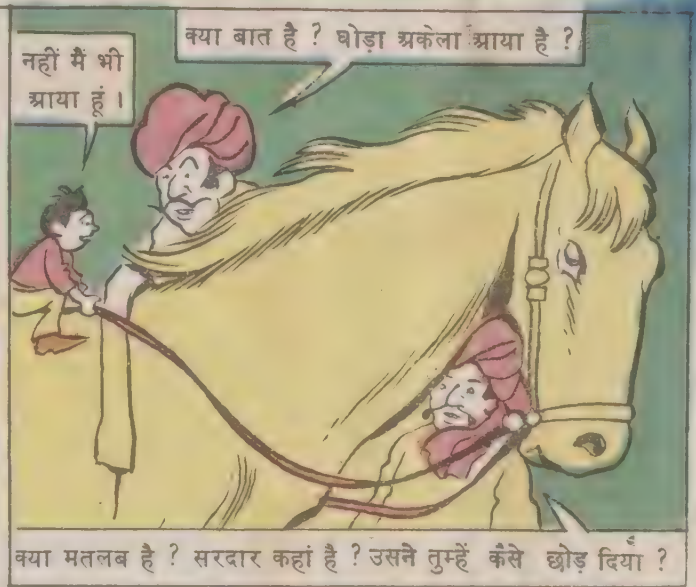
क्या बात है ? घोड़ा अकेला आया है ?
नहीं मैं भी आया हूं।
क्या मतलब है ? सरदार कहां है ? उसने तुम्हें कैसे छोड़ दिया ?

मुझे क्या ? वह तो अब तुम्हें भी छोड़ देगा।
हमें छोड़ देगा ? क्या बक रहे हो ??
बक नहीं रहा हूं ठीक कह रहा हूं। उसे कई मन सोना मिला है। और इतना बड़ा खजाना मिला है कि तुम सोच भी नहीं सकते। इतना बड़ा खजाना तुम देखो तो गश खा कर गिर जाओ।
सरदार इतना बेवकूफ नहीं है कि इतना बड़ा खजाना पाकर तुम से चिपटा रहे। जब उसने मुझे अपनी जेब से निकाल कर फेंका तो कह रहा था, इतनी दौलत मिल गई अब मुझे कुछ नहीं चाहिये। भाड़ में जाओ तुम। मेरे लिये सब मर गये।
सब मर गये ? हम भी मर गये ?
भाड़ में जायें हम भी ?
उसने यह भी कहा था कि सोना और खजाना लेकर वह किसी दूसरे देश में चला जाएगा। याद नहीं क्या नाम लिया था उस देश का।
नेपाल। नेपाल कहा होगा उसने ?
हां नेपाल ही कहा था।
वहीं एक गैंग बना रखा था उसने पहले।

डाकुओं को लेकर अंगूठा नन्द सीधा पवन के पिता के घर आ गया ।

वह रहा तुम्हारा धोखेबाज सरदार ।

अभी इसे धोखे का मजा चखाते हैं ।

सरदार में जो थोड़ी बहुत जान आई थी वह दो चार झटकों में जाती रही और वह वहीं ढेर हो गया । चेलाराम, पवन कुमार और उसके पिता की समझ में नहीं आ रहा था डाकुओं ने अपने ही सरदार के दे मारा, यह माजरा क्या है ?

अपने इस प्यारे सरदार की कुछ और मरम्मत करनी हो तो इसकी गठरी बांध लो और मेरे साथ चलो।
चेलाराम तुम भी साथ चलो।

सब घोड़ों पर सवार होकर फिर अंगूठानन्द के बताये रास्ते पर चल दिये।

कुछ दूर पहुंचकर वह सुरंग आई जहाँ से अंगूठा नन्द ने कैदी निकलते देखे थे।
यह है वह सुरंग जिसके अन्दर तुम्हारे बदमाश सरदार ने सोना और खजाना छुपाया है।

सोने और खजाने के लालच में किसी को कुछ होश नहीं था। शायद उनमें से हर डाकू किसी प्रकार यह माल अकेले ही हड़प जाने की योजना बना रहा था।

एक-एक करके सब डाकू गुफा में उतरने लगे।

और देखते ही देखते सब अन्दर चले गये।
अब वह भारी पत्थर लुढ़का कर गुफा का मुंह बन्द कर दो।
बताओ तो सही यह क्या कर रहे हो तुम ?
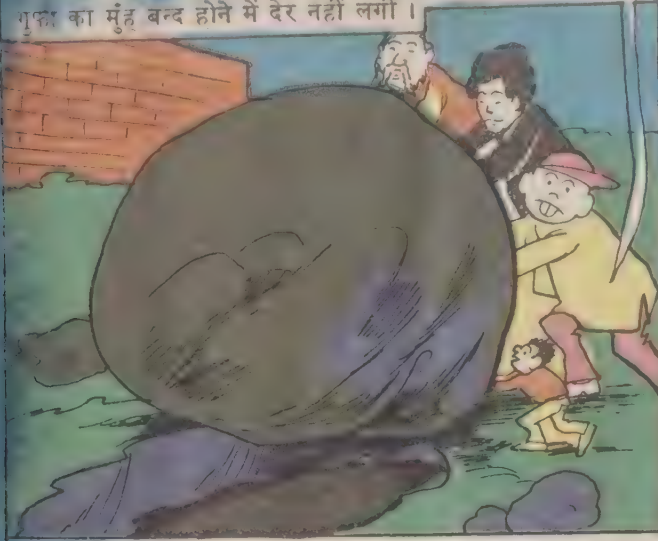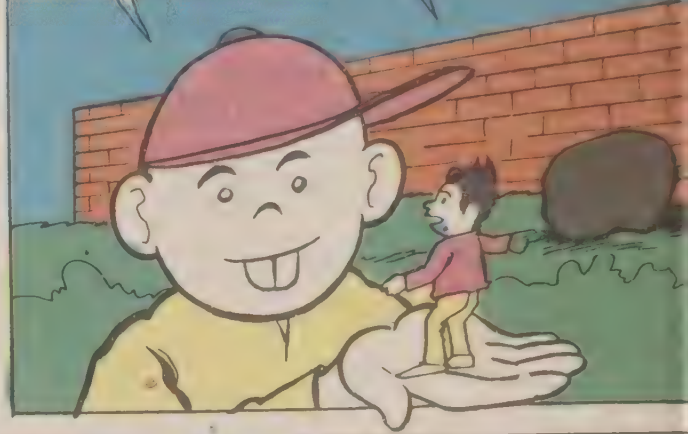
आइये आइये। तशरीफ ले आइये। दूसरी ओर से सुरंग का मुंह बहुत बड़ी चटान से बन्द कर दिया गया है। तुम भाग कर नहीं जा सकते।

आप दो कैदियों की बात कर रहे हैं। मैं झांजर डाकू की पूरी बारात लेकर आया हूं। मेरा इनाम निकालिये।

सब जेल पहुंचे तो वाकई डाकू सुरंग के छेद से अपना मुंह निकाल रहे थे और पुलिस वहां दो कैदियों के भागने पर छानबीन कर रही थी।

इससे भी बड़ा एक और कमाल आगामी अंक में देखिए।

बच्चा झमूरा

छुट्टन और मिट्ठन से कोई पूछे कि रोनी सूरत क्यों बनाई है, तो वह कहते हैं कि हम उस दिन को रो रहे हैं जब बच्चा झमूरे से हमारा पाला पड़ा था। क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोर्बा। इसकी सूरत देखो तो बारह बजे रहते हैं, पर यह आंख का अंधा आजकल पूरा नैनसुख बना हुआ है। हर आदमी इसकी प्रशंसा करता है। गर्लहोस्टल की लड़कियां इस पर जान छिड़कती हैं। और हमारे मुँह पर मक्खियां भिनभिनाने के लिए कोई गन्ने का रस भी नहीं छिड़कता और उधर बच्चा झमूरा से पूछिए तो उसे इस बात पर विश्वास है कि वह गर्ल फ्रैंडज के सहारे सीढ़ियां चढ़ता हुआ एक दिन तरक्की करके बहुत ऊपर पहुंच जाएगा।

पर सीढ़ी पर दोबारा नजर पड़ी तो माजरा कुछ और था ।

बचने वाले को उसने बचाया है जिसे यह बचाने गया था ।

मेरे शेर के बच्चे का भी जवाब नहीं ।

आगामी अंक में इन कलाकारों के गले फिर लगिए

नासिर प्रवेज—मेरठ

प्र० : क्या पाकिस्तान और भारत का क्रिकेट मैच अगले साल १९७९ में होगा यदि हां तो कार्यक्रम बताईये ।

उ० : पूरी उम्मीद है दोनों देशों के अधिकारी शीघ्र ही इस विषय पर वार्ता करने वाले हैं ।

सुरेश कुमार गुप्ता—बेरमो

प्र० : भारत और नेपाल के बीच क्रिकेट मैच कब और कहां हुआ था ?

उ० : नेपाल क्रिकेट नहीं खेलता ।

टोनी डब्ल्यू—जोधपुर

प्र० : मुझे क्रिकेट खेल बहुत ही अच्छा लगता है और मैं खेलता भी हूं । मैं भारत का क्रिकेट का एक अच्छा खिलाड़ी बनने की इच्छा रखता हूं । लेकिन जोधपुर जैसे क्षेत्र में क्रिकेट खेल कम होता है । कोई कोच नहीं, इसका कोई उपाय बताओ ।

उ० : इसका तो एक ही इलाज है कि आप किसी ऐसे स्कूल में प्रवेश लें जहां क्रिकेट खेली जाती है । कम से कम कालिज में प्रवेश लेते समय तो इस बात का ध्यान रखा ही जा सकता है कि कहां क्रिकेट खेलने का अवसर प्राप्त है । यह खेल पोस्टल कोर्स से सीखा जाने वाला तो है नहीं—यह भी हो सकता है कि आप अपने मित्रों की टोली बनाकर उनमें क्रिकेट के प्रति रुचि जगायें । और सब मिलकर खेलना शुरू करें—खेल शुरू करने के बाद रुचि स्वयं ही पैदा होती है ।

अशोक कुमार कनेरिया—भीकनगांव

प्र० : चन्द्रशेखर और बिशन सिंह बेदी की तुलना की जाये तो कौन अच्छा बालर है ।

उ० : वैसे तो दोनों ही श्रेष्ठ हैं, दोनों में एक बहुत बड़ा फर्क है बिशन बेदी स्पिन के कलाकार हैं । उन्होंने अपनी इस कला को खुद परिश्रम, बुद्धि तथा अनुभव से निखारा है । दूसरी ओर चन्द्रशेखर फ्रीक बालर हैं । फ्रीक यानि असामान्य उनकी शैली का दुनिया में दूसरा जोड़ नहीं है । वे ऐसे बालर संयोगवश बने, बचपन में उन्हें पोलियो हो गया और उनके हाथ पोलियो ग्रस्त हो गये । उनकी चक्कर में डालने वाली गेंदें उसी पोलियो ग्रस्त हाथ का कमाल हैं । यह ऐसा ही संयोग है जैसे कभी-कभी दो मुंह वाले बछड़े पैदा होते हैं । यह संयोग इतना बिरला होता है कि मान लो किसी और व्यक्ति को पोलियो हो जाये । उसका हाथ भी पोलियो ग्रस्त हो जाये तो भी इस बात के बहुत ही कम अवसर हैं कि पोलियो उसके हाथ पर भी ठीक वैसा ही प्रभाव छोड़ जाये जैसा चन्द्रशेखर के हाथ पर छोड़ गई ।
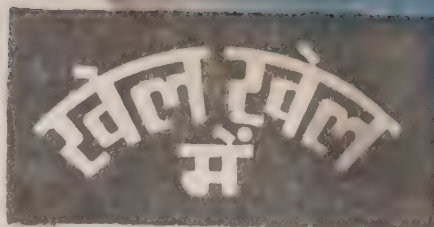
सुरेश सेठी—हरियाणा

प्र० : करसन घावरी ने किसी टेस्ट मैच में अपनी लेग ब्रेक बालिंग के सहारे कोई विकेट प्राप्त किया है ?

उ० : उन्हें हाल के आस्ट्रेलियाई दौर पर कुछ विकटें जरूर मिली हैं ।

रमेश चन्द—दिल्ली ६

प्र० : गवास्कर को कप्तान क्यों नहीं बनाते जबकि वह हर क्षेत्र में श्रेष्ठ है ।

उ० : भविष्य में सुनील गवास्कर का कप्तान बनना निश्चित है ।

राजेन्द्र कुमार शर्मा—(म. प्र.)

प्र० : भारत और आस्ट्रेलिया के बीच कितने टैस्ट हो चुके हैं और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध गवास्कर कितने शतक लगा चुके हैं, कृपया बताने का कष्ट करें ।

उ० : भारत आस्ट्रेलिया के बीच कुल ३० टैस्ट हुए हैं गवास्कर ने ३ शतक मारे हैं ।

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जींद

प्र० : ऐसे कौन से खिलाड़ी हैं जिन्होंने क्रिकेट में प्रथम टैस्ट में ही शतक बनाये हों ?

उ० : ऐसे भारतीय खिलाड़ी छः हैं । लाला अमरनाथ, दीपक शोधन, कृपाल सिंह, अब्बास अली बेग, हनुमत सिंह, विश्वनाथ तथा सुरेन्द्र अमरनाथ ।

युसूफ अल्ला—दामोह (गुजरात)

प्र० : अंशुमन गायकवाड़ का उच्चतम स्कोर बतायें ?

उ० : उनका उच्चतम स्कोर [illegible] के विरुद्ध ८५ रनों का है ।

राजेश भुटानी—खिवाड़ी

प्र० उन भारतीय खिलाड़ियों के नाम बताएं जिन्होंने टैस्ट मैचों में ३००० रन पूरे कर लिए हैं तथा कितने टैस्टों में पूरे किए हैं ?

उ० ३००० रन बनाने वाले भारतीय खिलाड़ियों की सूची इस प्रकार है !

खिलाड़ी	कुल रन संख्या	कुल टैस्ट मैच
पी आर उम्रीगर	३६३१	५९
बी. एल मंजरेकर	३२०६	५५
चन्दू बोर्ड	३०६२	५५
सुनील गावस्कर	३२२६	३३
विश्वनाथ	३१५४	४३

सैयद अब्दुल जब्बार—बीकानेर

प्र० भारत का न्यूनतम टैस्ट स्कोर क्या है ?

उ० १९७४ में दूसरे टैस्ट में भारत का दूसरी पारी में बनाया ४२ रनों का स्कोर । इस पारी में पूरा स्कोर यह था ; गावस्कर-५, सोलकर-१८ नॉट आऊट वाडेकर-३, विश्वनाथ-५, ब्रिजेशपटेल-१, इंजीनियर-०, मदनलाल-२, आबिद अली-३, बेदी-० तथा प्रसन्ना-५ ।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर

प्र० पेले फुटबाल के बादशाह हैं तो क्रिकेट का बादशाह कौन है ?

उ० हम कितनी बार लिख चुके हैं गैरी सोबर्स ।

शशि कान्त गर्ग—(उ. प्र.)

प्र० क्या भारतीय क्रिकेट के अजूबा भगवत चन्द्र शेखर की शादी हो गई ?

उ० हां ।

एम० आलम—सासाराम

प्र० विश्व में सबसे अच्छा तैराक कौन है ?

उ० अमरीका के जिम मैंबर्स ।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वालीबाल कैसे खेलें

गेंद चमड़े के गोल खोल की बनी होती है। इस खोल के भीतर रबर का एक गोल ब्लेडर रहता है, जिसमें पम्प द्वारा हवा भरी जाती है। ब्लेडर के फूलने से बाहर का चमड़े का खोल गोल आकार में आ जाता है।

ब्लेडर का मुंह बाँधकर चमड़े के खोल के भीतर कर दिया जाता है और फिर फीते द्वारा चमड़े के खोल का भी मुंह बन्द कर दिया जाता है। चमड़े के खोल का खुला भाग बिल्कुल उतना ही होता है जितना जूते का फीता बांधने वाला स्थान।

गेंद का फूलने पर भार २६० और २८० ग्राम के मध्य ही होना चाहिए। और आकार की दृष्टि से गेंद की फूलने पर परिधि ६५ या ६७ सें० मी० होनी चाहिए।

इस खेल में एक दल में छह खिलाड़ी होते हैं। छह खिलाड़ियों से कम होने पर खेल ढंग से नहीं खेला जा सकता; क्योंकि छहों खिलाड़ियों की अपनी अपनी जगह पर महत्वपूर्ण स्थिति होती है।

घायल होने पर या अन्य किसी कारण-वश किसी भी खिलाड़ी के स्थान पर दूसरा खिलाड़ी लिया जा सकता है।

पोशाक

किसी एक टीम के खिलाड़ियों की ड्रेस एक जैसी होनी चाहिए। मुख्य पोशाक के रूप में सुविधा के अनुसार खिलाड़ी को बनियान और जाँघिया ही पहनने दिया जाता है। और पैरों में कपड़े के जूते ज्यादा सुविधाजनक होते हैं।

खिलाडियों की बनियान पर पीठ वाले हिस्से पर बड़े आकार वाले नम्बर पड़े होते हैं, ताकि खिलाड़ियों की पहचान आसानी से की जा सके।

खिलाड़ियों की स्थिति

खिलाड़ियों को निम्न नामों से पुकारा जाता है, और मैदान में उनकी स्थिति इस प्रकार होती है—

(१) राइट बैक
(२) सेन्टर बैक
(३) लेफ्ट बैक
(४) राइट फारवर्ड
(५) सेन्टर फारवर्ड
(६) लेफ्ट फारवर्ड
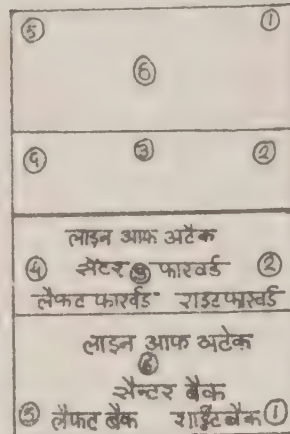
राइट बैक

राइट बैक के स्थान पर खेलने वाला खिलाड़ी मैदान के आखिरी लाईन के दाईं तरफ खड़ा होता है। राइट बैक को हमेशा सतर्क और चौकन्ना रहना पड़ता है; क्योंकि विपक्ष का सर्विस करने वाला खिलाड़ी गेंद को ज्यादातर लम्बी ही फेंकता है और गेंद ऐसी जाती हुई मालूम होती है जैसे सीमा के बाहर जा रही है।

इसलिए राइट बैक को सतर्क रहना चाहिए और गेंद अपने पास आते ही उसे जाल के पास खड़े अपने लेफ्ट फारवर्ड या राइट फारवर्ड को पहुंचा देनी चाहिए। गेंद ऊंची उठती हुई ही आनी चाहिए ताकि जाल के पास वाले दोनों खिलाड़ियों में से कोई भी जिसके पास गेंद आ रही हो—वाली मारकर पाइंट या अंक अर्जित कर सके।

सेन्टर बैक

सेन्टर बैक के स्थान पर खेलने वाले खिलाड़ी का खेल की दृष्टि से दूसरा स्थान माना जाता है।

सेन्टर बैक खिलाड़ी को विपक्षी टीम की ओर से फेंकी गयी गेंद को प्राप्त करने का अच्छा अभ्यास होना चाहिए। साथ ही विपक्षी दल के मैदान में गेंद को वापस ऐसे स्थान पर फेंकना चाहिए, जहाँ कोई खिलाड़ी न हो, वहाँ का खिलाड़ी असावधान हो।

सेन्टर बैक गेंद को सीधा भी फेंक सकता है और वह चाहे तो गेंद को उठाकर जाल के पास खड़े अपने खिला[ड़ी] को दे देता है। उनमें से कोई भी खि[लाड़ी] ऊंचा उछलकर विपक्षी दल के मैदा[न में] खाली स्थान को लक्ष्य कर 'वाली' म[ारकर] अंक अर्जित करता है।

गेंद को सीधा यानी डायरेक्ट [या] रोटेशन से यानी इनडायरेक्ट रूप में भी चाहे मौका देखकर विपक्षी मैद[ान में] फेंकता है। ज्यादातर अंक अर्जित क[रने के] लिए रोटेशन सिस्टम द्वारा खेलकर ही मारने की प्रथा है; क्योंकि वाली [से] से अंक अर्जित करने के चांस [अधिक] होते हैं।

लैफ्ट बैक

लैफ्ट बैक के स्थान पर खेलने [वाला] खिलाड़ी दूसरी पंक्ति में खड़ा होता है।

लैफ्ट बैक खिलाड़ी को भी [हमेशा] सतर्क रहना चाहिए। उसे यह [देखना] चाहिए कि ऊंची आ रही गेंद जो वि[पक्षी] टीम द्वारा फेंकी गयी है—साइड लाइ[न और] पीछे की आखिरी लाइन के भीतर [गिरेगी] या बाहर। यदि यह अंदाजा हो जा[ए कि] वह सीमा रेखाओं से बाहर गिरेगी त[ो उस] वक्त उसे गेंद छोड़ देनी चाहिए औ[र उसे] को छूना नहीं चाहिए। इस प्रकार सर्विस करते स्वयं की टीम को मौका भी मि[लता] है और विपक्षी टीम अंक भी अर्जित [नहीं] करने पाती।

यदि लैफ्ट बैक खिलाड़ी यह म[हसूस] करता है कि गेंद सीमा रेखाओं के अन्द[र या] ऊपर गिरेगी तो उसे हस्तक्षेप करके गें[द] अपने जाल के पास वाले खिलाड़िय[ों को] पहुंचा देनी चाहिए।

गेंद कहां गिरती है, इसका बारी[की से] अंदाज लगाने के लिए लैफ्ट बैक को चतुराई से तथा तुरन्त निर्णय लेकर [काम] करना चाहिए।

राइट फारवर्ड

राइट फारवर्ड अग्रिम पंक्ति[का] खिलाड़ी होता है जैसा कि चित्र में द[िखाया] गया है।

राइट फारवर्ड खिलाड़ी को [वाली] मारने का बहुत अच्छा अभ्यास [होना] चाहिए। वाली के अलावा वह डा[यरेक्ट] धीरे से गेंद को विपक्षी मैदान के [खाली] स्थान में सरका सकता है।

(क्रमश

फैंटम
और
डीयाना की नौकरी
ओह!
तुमने जो अपराध किया है उसे मानो और हस्ताक्षर करो!
यह सब झूठी रिपोर्ट है!

सिपाही...क्या यह जनरल तारा का निजी दफ्तर है?
कोई नहीं यह लो...
ओह!
डियाना इस पर हस्ताक्षर कर दो मैं तुम्हे ऐसी हालत में नहीं देख सकता...

मिस पामर...यह सब मजाक नहीं है तुम्हें अपना अपराध
बेवकूफ! यह सब झूठा है जैसे नकली कैदी थे...
डियाना भगवान के लिए इस पर हस्ताक्षर कर दो।
आहा! कितनी खूबसूरत है और निर्भीक भी...मैं
मेजर इसको छोड़ो आदमी
डियाना को शिकंजे पर लिटाया हुआ है।

क्या तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो कि तुमने जनरल के बारे में गलत खबर दी है?
नहीं, बिल्कुल नहीं।
यह हमें डरा धमका रहे है!
अभी पता लगता है कौन डरा धमका रहा है!
!
ओह!
उसे रोको!
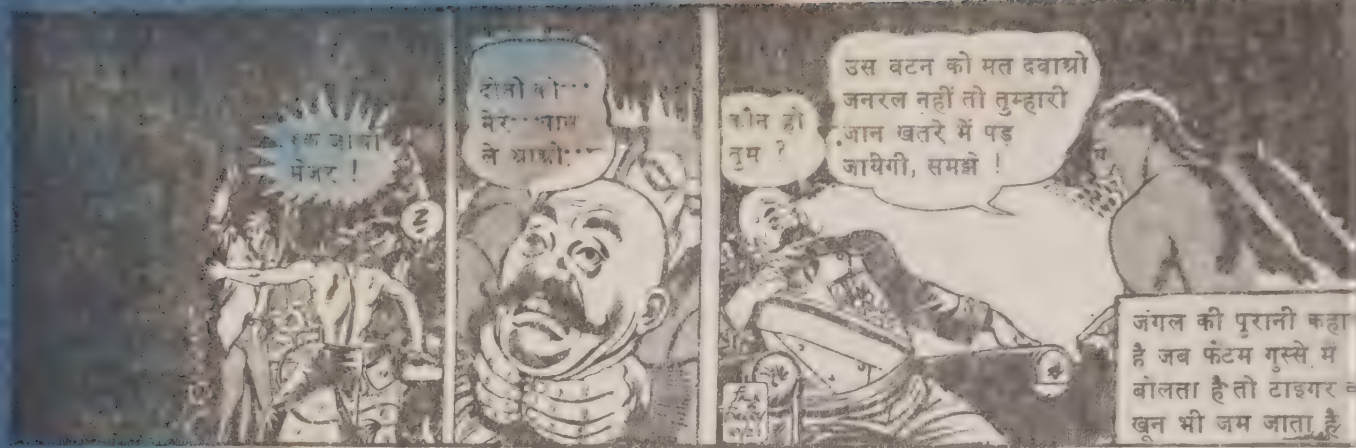
10 रु० पुरस्कार जीतिए

अन्तिम तिथि: 26 जुलाई '68

बायें से दायें

१. जगह जहां सुगन्धित बत्ती का पहला भाग नीचे जलता है ? (५)
५. ऊपर-ऊपर की गहराई की नहीं । (३)
६. यह किसी मृत की आनन्ददायक यादगार है ? (३)
८. इसे कमाने से खूब वाहवाही होती है ! (२)
१०. एक डली के लिए अंग्रेजी में उल्टी लड़ाई ? (२)
११. देखना शुरू में जहां आमतौर पर अकल रखी जाती है और बाद में नालायक का सिर ! (३)

ऊपर से नीचे

१. ऐसी बदतमीजी जिसमें बीच में तमीज है और शुरू-आखिर में आधा अता-पता । (५)
२. इसके बनने पर बुरी हालत होती है । (२)
३. यह भी खूब रही महल में एक कवि छिपा बैठा है । (३)
४. पहर वाला को एक नालायक बनाइये । (५)
७. रूसी शासक के रोने के रोने की आधी अदा । (२)
९. उल्टी सिगरेट पीने का सन्देह । (२)

अंक नं० २१ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं का परिणाम

कार्टून बनाओ का विजेता: अरविंद सिंह - चण्डीगढ़

वर्ग पहेली :—
बहुत से पाठकों का हल सही था इसलिये निर्णय लाटरी द्वारा करना पड़ा
विजेता :- दीपक माहेश्वरी

भगवान का रूप किसी भी पाठक ने अच्छा बनाकर नहीं भेजा इसलिये विजेता कोई नहीं ।

प्र० : प्याज काटते समय आंखों में
ंसू क्यों आते हैं ?

उ० : जैसा कि आपको विदित है एक
कार से हम हर समय रोते हैं क्योंकि पलक
पकते ही आंख के ऊपरी कोने में स्थित
श्रुग्रन्थि से कुछ पानी निकलता है, इसे ही
म आंसू कहते हैं।

साधारणतया इस ग्रन्थि से निकले पानी
ा काम आंखों को साफ तथा तर रखना
 ताकि कोरनिया सूखने न पाये। परन्तु
से ही आंख में कुछ उत्तेज्य पहुंचता है वैसे
ी पलक झपकती हैं तथा अश्रुओं द्वारा
त्तेज्य वस्तु को आंख से निकाल दिया
ाता है।

धुंए से आंखों में आंसू आते हमने
क्सर देखे हैं। इसी प्रकार प्याज काटते समय
ी एक प्रकार का उत्तेज्य तत्व आँख में
ाता है तथा आंख में आंसू आ जाते
। प्याज में गंधक मिश्रित तेल होता
 जिससे न केवल तेज गंध उत्पन्न
ती है बल्कि इससे आंख में जलन भी होती
। बस इसके आंख में जाते ही आंख झप-
नी आरम्भ हो जाती है ताकि अश्रु ग्रन्थि
 निकले पानी द्वारा जलन पैदा करने वाले
त्व को धो दिया जाए। और हमारी आंखों
 आंसू बहने लगते हैं।

प्याज एक अनोखी सब्जी है, ये लिलि
रिवार से सम्बन्धित है तथा इसका उत्पादन
शिया में अधिक होता है। खाने में हजारों
ों से मनुष्य द्वारा प्याज प्रयोग में लाई
 रही है। आजकल यूरोप के देशों में भी
का उत्पादन बहुतायत से किया जाता है।
ेप में स्पेनिश प्याज का अधिक चलन है।
कम तीखी होती है तथा वजन में लगभग
क-एक प्याज एक-एक पाउंड की होती है।

हमारे अनेक पाठकों द्वारा

प्र० : रेशम बनाने के लिए कीड़ों का
ोग सबसे पहले कब और कहां हुआ ?

रवीन्द्र प्रकाश, माडल टाउन

उ० : रेशम या रेशमी कपड़ा रेशम के
ड़े के बहुत ही नाजुक तथा अच्छे जाले से
ता है ये जाला वास्तव में एक कूकून होता
है जो ये कीड़ा अपने विकास के एक चरण
में अपने चारों ओर बुनता है।

रेशम बनाने की विधि के भेद का चीन
निवासियों को ४००० वर्ष पहले ही पता
लग गया था। इस विषय में वहां एक पुरा-
तन कथा प्रचलित है। एक बार चीन की
सुन्दर शहजादी सीलिंगशी से हाथ धोते हुए
गरम पानी के तसले में एक कूकून गिर गया
और उसने देखा कि कूकून पर एक सुन्दर
चमकीला धागा लिपटा है जो कि प्रयत्न
करने पर खोला जा सकता है। ये भी कहा
जाता है कि इस शहजादी ने रेशम के धागे
को खोलने तथा रेशम बनाने का प्रयत्न
किया था। साथ-साथ उसने रेशम के कीड़ों को
पालने की भी कोशिश की थी। रेशम बनाने
तथा इस कीड़े को पालने की विधि के भेद
को चीनियों ने कई सौ वर्ष तक संसार से
छुपाए रखा था।

दूसरे देशों के व्यापारी चीन की सरहद
पर आकर खूबसूरत कीमती रेशम खरीदते
थे। कभी-कभी तो प्राचीन एशिया तथा
यूनानी टापुओं में इस रेशमी कपड़े को उधेड़
कर फिर से सुन्दर डिजाइनों में बुना
जाता था।

रेशमी कीड़े पालने का भेद जापान में
लगभग तीसरी शताब्दी में पहुंचा था। सन
५५० में बादशाह बाईजेनटियम ने दो पर-
शियन साधुओं को चीन भेजा था ताकि वो
रेशमी कीड़े के अंडे बांस में छुपाकर जापान
लायें। और इस प्रकार रेशम का उद्योग
कोन्सटेन्टीपोल नामक स्थान में आरम्भ
हुआ।

यहां से धीरे-धीरे रेशम उद्योग दक्षिण
पूर्वी यूरोपीय देशों में फैल गया तथा इटली
अपने यहां बनी रेशम के कम्खाब, शनील
तथा डमास्क के लिये संसार में सबसे पहले
प्रसिद्ध हुआ।

प्र० : मनुष्यों के शरीर पर बाल क्यों
होते हैं ?

गुरुदास मिरोध, बस्ती

उ० : मनुष्य एक स्तनपायी जीव है
और सब स्तनपायी जीवों के कुछ न कुछ
बाल अवश्य होते हैं। दूसरे जीवों के बालों
के उपयोग के बारे में तो हमें काफी ज्ञान
है जैसे बाल शरीर की गरमी को बनाये
रखने में सहायक होते हैं। गर्म देशों में बाल
पशु पक्षियों को सीधी धूप से बचाते हैं,
गर्दन के लम्बे बाल गर्दन की वर्षा से रक्षा
करते हैं। साही के बाल दुश्मन से मुकाबला
करने में उसकी सहायता करते हैं। परन्तु
प्रश्न है मनुष्य के बाल क्यों होते हैं तथा
उनका क्या उपयोग है ?

जन्म के समय शिशु का सारा बदन
बारीक कोमल बालों से ढका रहता है तथा
व्यस्क होने पर ये बाल जवानी के बाल का
रूप धारण कर लेते हैं, इन बालों की बढ़ो-
तरी का जिम्मा शरीर की विशेष ग्रन्थियों के
विशेष होरमोनस पर निर्भर है। पुरुषों में
ये होरमोनस उनके शरीर तथा चेहरे के बाल
बढ़ाते हैं परन्तु सिर के बालों के बढ़ने पर
नियन्त्रण रखते हैं। परन्तु स्त्रियों में होर-
मोनस इससे विपरीत कार्य करते हैं अर्थात
सिर पर बाल अधिक बढ़ते हैं तथा चेहरे
तथा शरीर पर कम। पुरुषों तथा स्त्रियों के
बालों के बढ़ने का अन्तर दूसरी लिंग
विशेषता है अर्थात इस विशेषता द्वारा दोनों
लिंगों को अलग किया जा सकता है। पुरुषों
की दाढ़ी से न केवल उसके पुरुष होने का पता
चलता है अपितु ये उसकी मान मर्यादा तथा
बल का प्रतीक भी होती है। इसी प्रकार
स्त्रियों के बाल उनकी सुन्दरता की वृद्धि
करते हैं।

चार्ल डारविन प्राकृतिक चिकित्सक के
अनुसार पसीना तथा वर्षा का पानी सुखाने
के लिये भी बाल आवश्यक हैं। शरीर के
कुछ भागों जैसे भौहें, बरौनियां, कानों तथा
नाक के बाल इन खुली जगहों को मिट्टी तथा
किटाणुओं से बचाते हैं।

क्यों और कैसे ?

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग

नई दिल्ली-११०००२

आपको पता लगता है कि बरसातें आगयीं जब

जब दरवाजा खोलने के लिये आपको सैमसन के बराबर जोर लगाना पड़े। बरसातों में दरवाजे सीलन के कारण फूल जाते हैं और जाम हो जाते हैं।

बादलों के कारण रेडियो से चटपट की आवाज आने लगती है। ऐसा लगता है जैसे रेडियो चने भूनने वाले की भट्टी का आंखों देखा हाल प्रसारित कर रहा हो।

जब कार वाले आपको कीचड़ के छींटों से लथपथ कर जाते हैं और आपके मुँह से गाना फूटता है—'लागा चुनरी में दाग छुपाऊं कैसे ?'
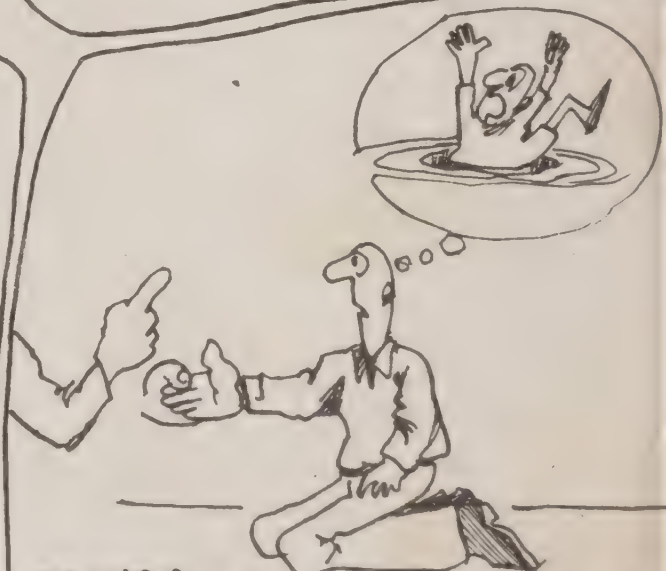
जब ज्योतिषी पानी से खतरे का योग बताता है और आपकी आंखों के सामने पानी के नीचे छिपे मेन होल में जा गिरने का दृश्य तैरता है।

ब मकान मालिक के दर्शन दुर्लभ होने लगते हैं । वह सलिए नहीं आता कहीं आप चूहते छत की मरम्मत की मांग न पेश कर दें ।

जब गधे मोटे और खुश नजर आने लगते हैं । बरसातों के आरम्भ में मंत्रियों द्वारा बनमहोत्सव पर लगाये पौधे खा खा कर ।

ब छतरी हेमा मालिनी से भी अधिक सुन्दर व प्यारी लगने लगती है ।

जब सड़कों पर पानी जमा हो जाता है और स्कर्ट वाली महिलायें साड़ी वालियों पर हंसने लगती हैं ।

जब माचिसों का खर्च कई गुना बढ़ जाता है सीलन के कारण माचिसें जलती ही नहीं ।

विविध भारती से बरसात के रंग में तर गाने आने लगते हैं ।

मकान मिल गया

कवि कमण्डल ने एक पान की दुकान पर आकर लम्बी सांस ली और धीरे से बुदबुदाये—'तो क्या हमें कहीं भी मकान नहीं मिलेगा। आखिर लोग उनके कवि होने से डर क्यों जाते हैं। मकान ढूंढ़ते-ढूंढ़ते रोज संध्या हो जाती है, पर हमें मकान मिलता नहीं। आखिर हम क्या करें।' इतना कहकर उन्होंने एक दृष्टि अपने पैरों की चप्पलों पर डाली। चप्पलें फैलती जा रही थीं।

कवि कमण्डल के साथ ट्रेजेडी यह थी कि वे जब भी किसी के यहां मकान देखने जाते तो लोग मकान तो शुरू में बड़े उत्साह के साथ दिखाते, पर जब तय होते समय धंधे की बात होती तो वे अपना धन्धा कविता लिखना बता देते। बस इतना सुनते ही मकान मालिक के हौसले पस्त हो जाते और यह जानकर कि उनके सामने खड़ा व्यक्ति कवि है तो वह उन्हें टाल जाता। सभी मकानों में उनके साथ यही हादसा हुआ।

तो फिर क्या करें? यह सोचकर उन्होंने दुकान से सिगरेट, पान खरीदा तथा सिगरेट का कश जोर से खींचा। एक हल सोचकर वे उछल पड़े। इस हल के आते ही उनके कदम जल्दी-जल्दी मकान की खोज में निकल पड़े। कुछ ही पल में वे एक मकान के सामने थे। कुण्डा खटखटाया तो एक मोटी औरत ने दरवाजा खोल दिया। 'कोई कमरा खाली है?' बहुत ही मीठी वाणी में कमण्डलजी ने महिला से पूछा।'

'है। आप अन्दर आइये' महिला बोली।

'कमण्डल जी मकान में प्रवेश कर गये। महिला ने उन्हें एक कमरा दिखाकर कहा यह कमरा है, आपको पसन्द आएगा?'

'अच्छा है, बस एक किचन और बताइये।'

'आइये' महिला उन्हें किचन दिखाने लगी।

'वेरी गुड, मेरे लिए पर्याप्त है। बस अब तो यह बताइये इसका मासिक किराया क्या होगा?' कमण्डलजी खुश होकर बोले।

'दोनों कमरों का किराया नब्बे रुपये प्रतिमाह होगा। बिजली, पानी का चार्जेज अलग होगा।' अभी महिला उन्हें इतना ही बता रही थी कि उनके पतिदेव ने वहां प्रवेश किया।

परिचय होने पर कवि कमण्डल ने बड़े जोश में उनसे हाथ मिलाया। कहने का असल में मतलब यह है कि कमण्डलजी ने अपनी लच्छेदार और चुस्त बातों से उन दोनों का दिल जीत लिया और अपने को विकास विभाग में एक अफसर के पद पर कार्य करता बतलाकर मकान हथिया लिया। दूसरे दिन से कवि जी उसमें आ जमे।

आज कविजी का इस मकान में पांचवां रोज था। वे कोई नौकरी आदि करने कहीं जाते नहीं थे। बस सारे दिन भर कमरे को बन्द कर कविताएं लिखते रहते। इच्छा होती तो मौके-मौके काव्य प्रलाप कर चाय पीने हो आते।

मकान मालिक व मालकिन को कुछ संशय हुआ कि उनका यह किरायेदार कुछ करता भी है या नहीं। वह तो उन्हें किसी दफ्तर में अफसर बता रहा था। दरअसल वे अपने किराये के प्रति चिन्तित थे। भूल से उन्होंने उससे किराया एडवांस भी नहीं लिया था। उसी दिन की शाम को मकान मालिक कविजी के कमरे में आ धमके। देखा तो कविजी सृजनरत थे।

कविजी ने मकान मालिक के सम्मान में अदब से उठकर हाथ मिलाया और पलंग पर बैठने का इशारा किया।

'कैसा चल रहा है साहब?' मकान मालिक ने पूछा।

'ठीक ही चल रहा है। कुछ लिखने लगा था?'

'आजकल क्या छुट्टी पर चल रहे हैं आप?'

'नहीं तो। मैं नौकरी करता ही कहां हूं? और आप ही बताइये भला नौकरी में रखा भी क्या है?'

'तो—तो फिर आप काम क्या करते होंगे जी?'

मकान मालिक की आवाज में घबर
थी।

'असल में मैं कवि हूं। कविता लि
हूं।' कविजी बोले।

मकान मालिक को जैसे कवि श
एक झटका लगा हो। वह बेहोश होते-
सम्भल गया और एक आह भरकर
बुदाया 'भगवान बचा। कुछ ही दे
मकान मालिक उठकर चला आया
सीधा अपनी पत्नी के पास आकर बो
प्रिये! गजब हो गया, अपने मकान में
यह नया किरायेदार है, वह सामाजिक प्र
नहीं है।'

'क्या मतलब?'

'मतलब क्या—वह एक कवि
पति की बात सुनकर पत्नी चीखी—'
माई गाड। गजब...।'

'तो अब क्या करें?' पति ने पूछा

'करें क्या? तीन महीने का एडव
किराया मांगो। यह दे नहीं पायेगा
खाली करके चला जायगा। पत्नी ने
को युक्ति बतायी।

'तुम समझती नहीं, यह एक ऐसा
है जो एक बार घुस जाय तो फिर निकल
नहीं।' पति बोला।

खैर किराया मांगकर तो देखो।' प
बोली।

दूसरे दिन मकान मालिक किर
मांगने कमण्डलजी के पास गया तो कमण्ड
जी खड़े हो गये और काव्य प्रलाप करने
कविताएं भी कुछ ऐसी थीं कि मकान मालि
के कुछ भी पल्ले न पड़ रही थी। ला
कोशिश की उसने कि कमण्डलजी अपना
बन्द कर दें। पर कमण्डलजी लगातार आ
बन्द किये कविता पाठ करते रहे। आखि
बोर होकर मकान मालिक कानों में उंग
लगाकर भाग गया।

इसी दिन से अब कमण्डलजी ने
नयी चाल खेलनी शुरू कर दी। कि
क्या कि जब लोगों के सोने का समय हो
तब कमण्डलजी काव्य प्रलाप करते जो र
के ११ और १२ बजे तक बिना रुके चल
रहता। मोहल्ले वालों की नींद हराम
गयी कि यह क्या जानवर आ गया। लो
ने जाकर कमण्डलजी को समझाया भी
उनकी यह हरकत सर्वथा अनुचित, अनैति

मदहोश
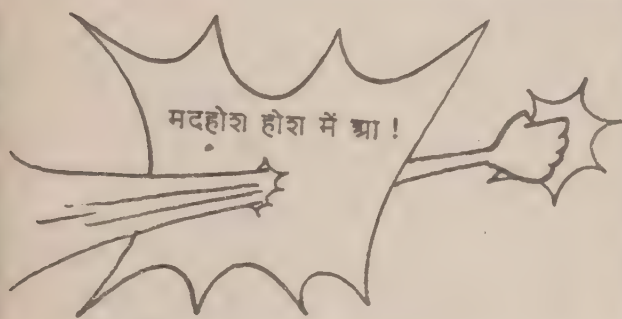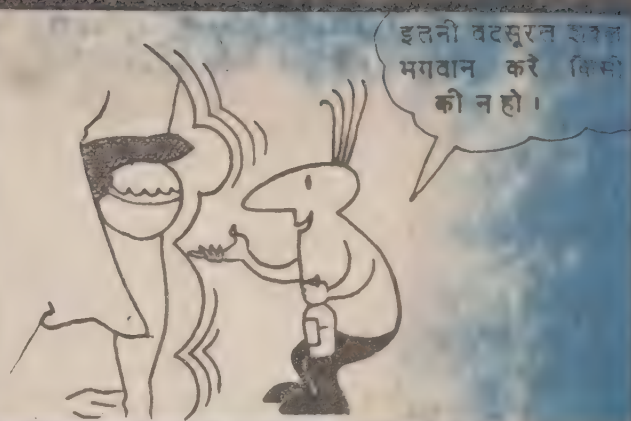
एवं असामाजिक है। पर कमण्डलजी के कानों में जूं तक नहीं रेंगी। वे उसी कार्य अनुसार काव्य प्रलाप में लग जाते।

एक दिन मोहल्ले के सभी लोगों ने एक सभा की और यह मशविरा किया जाने लगा कि इसको यहां से कैसे भगाया जाय। किसी ने अपनी राय दी उसे मार-पीटकर ही भगा देना अच्छा है—ऐसे तो वह जाने से रहा।'

किसी ने कहा कि इसे पुलिस में सूचना-देकर भगाया जाय। किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा। पर मोहल्ले का एक बुजुर्ग व्यक्ति बोला—'देखिये भाई लोगों, कवि को दूसरे की रुचि अरुचि से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसका यही इलाज है कि यह प्राणी अब यहां से जाने का नहीं, आओ हम सब मिलकर इसके पास चलें और इससे पूछें कि आखिर वह रात भर प्रलाप क्यों करता है?'

सब लोग कमण्डलजी के कमरे पर पहुंचे। बुजुर्ग सज्जन पूछने लगे—'क्यों कमण्डलजी, आप आखिर हम लोगों से चाहते क्या हैं?'

'क्या मतलब है? मैं आपका कथन नहीं समझ पाया।'

'कथन यही है कि आप रात को देर तक क्यों रोते रहते हैं? सारे मौहल्ले की नींद हराम कर रखी है आपने। आप आखिर रात भर क्यों कविता पाठ करते हैं?'

'ये मुझसे मकान का किराया क्यों मांगते हैं?' कमण्डलजी ने अपने मकान मालिक की ओर इशारा करके कहा।

'बात तो सही ही है। ऐसा है कि मि॰ वर्मा आप इनसे किराया अब नहीं मांगोगे। आप अपने किराये के लिए सारे मौहल्ले का चैन नहीं छीन सकते।' मौहल्ले के सभी लोगों ने यह निर्णय दिया, जिसके लिए वर्मा जी मान गये। साथ ही कमण्डल-जी को भी यह हिदायत दी कि जिस दिन उनसे किराया मांगा जाये उसी दिन काव्य प्रलाप करें सदैव नहीं। कमण्डलजी उसके लिए मान गये और बुदबुदाये 'मकान मिल गया।'

●

चना कुरमुरा

"ओह चम्पा! मैंने सुना है कि तुम्हारे पति को नींद में चलने की आदत है?"

"है तो, पर घबराने की कोई बात नहीं। वे इतने आलसी हैं कि तीन चार कदम चलकर फिर लेट जाते हैं।"

●

पत्नी को ब्यूटी सैलून में अपने बाल घुंघराले कराने जाते देखकर पति बोला, "यदि भगवान को तुम्हारे बाल घुंघराले करने थे, तो खुद ही घूंघर डाल देता।"

पत्नी मुस्करा कर बोली, "जब मैं बच्ची थी तो उसने मेरे बाल घुंघराले बनाये थे और जब मैं बड़ी हो गई हूं तो वह कहता है कि यह बड़ी हो गई है, इतना सा काम आप भी कर सकती है।"

●

पिछला वर्ष महत्वपूर्ण वर्ष रहा। देश के लिए यह पुनर्जीवन का वर्ष रहा, पंजाब के लिए तो यह, सरदार प्रकाश सिंह बादल के नेतृत्व में पूर्ण वचन बद्धता से पूर्ण विकास का वर्ष रहा। कुछ महत्वपूर्ण जानकारी इस प्रकार है :—

थीन बांध परियोजना को स्वीकृति

१६ वर्ष तक रुकी रहने के बाद, रावी नदी पर एक बांध बनाने के लिए ३०० करोड रुपए की एक परियोजना निश्चित की गई। पूरी होने पर इससे ५०० मे. वा. बिजली का उत्पादन होगा तथा ६ लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाएगी।

अमृतसर स्थापना समारोह

'सिटी ग्राफ डेस्टिनी' की स्थापना की ४००वीं जयन्ती, इस के महत्व के अनुरूप ही मनाई गई। अमृतसर के सर्वतोमुखी विकास के लिए २ करोड़ रुपए की राशि अलग से निश्चित की गई है।

समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम

पंजाब पहला राज्य है जिसने ३०२ करोड़ रुपए का समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम आरम्भ किया है। इस के परिणाम स्वरूप प्रत्येक गांव में ५ किलोमीटर के अन्दर अन्दर, किसान को, सभी आवश्यक सुविधाएं दी जाएंगी; कृषि-निवेशों की सप्लाई, आवश्यक वस्तुओं, समाज, स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएं दी जाएंगी। इससे पूर्णतया लाभकर रोजगार मिलेगा। कृषि उत्पादन में कम से कम ५०% की बढ़ोतरी प्राप्त करने, ग्रामीण उद्योग और व्यापार को पुनर्जीवित करने, कृषि पर आधारित उद्योगों को प्रोत्साहन और स्थानीय साधनों का पूरी तरह से विकास निश्चित करना है।

कृषि विकास

नलकूपों की समान मासिक सममूल्य दर प्रति अ.श. १६ रुपए से घटा कर ११.५० रुपए कर दी गई है। १२००० क्विंटल प्रमाणित धान वितरित किया गया जब कि पिछले वर्ष यह मात्रा ४००० क्विंटल थी। बहुत अधिक मात्रा में खाद वितरित की गई, जिसके परिणाम स्वरूप केवल एक वर्ष में धान के उत्पादन में ४१% तथा गेहूं के उत्पादन में १०% की वृद्धि हुई।

जल मार्गों का ईंटों से पक्का करना

५०० कि.मी. लम्बी कनाल (जल) वितरिका को, एवं १६०० कि.मी. खेती की नहरों को ८ महीने से कम समय में ही पक्का किया गया है, जब कि पिछले वर्ष यह काम क्रमशः ४८५ कि.मी. और १५३७ कि.मी. ही किया गया था! भारत में पंजाब, अपने सभी जल मार्गों को पक्का करने वाला पहला राज्य होगा।

जन साधारण के लिए

सहकारी समितियों के ३००० बिक्री केन्द्र और पुमुप दुकानें गेहूं आटा, सब्जियां और दालें निश्चित और स्थिर मूल्यों पर दे रही हैं। ये भाव पूरे वर्ष के बाजार भाव से कम रहे हैं।

समाज के कमजोर वर्गों के लिए कल्याण कार्य

प्रत्येक हरिजन परिवार को सुयोजित ढंग से ५० वर्ग गज घर बनाने के लिए जमीन दी जाएगी। विदेश में रोजगार के लिए जाने वाले हरिजनों को, यात्रा में होने वाले खर्चे के लिए कर मुक्त ऋण दिए जाएंगे। 'शेड्यूल्ड कास्ट लैंड डेवलपमेंट एण्ड फाइनेंस कार्पोरेशन' द्वारा हरिजनों को उन के आर्थिक सुधार के लिए लगातार सहायता दी जाती है। १९७८-७९ में वृद्धावस्था में दी जाने वाली पेंशन के लिए ३०० करोड़ रुपये दिए गए हैं।

सड़कों का जाल और पुल

बैसाखी, १९७९ तक सभी गांव पक्की सड़कों से जोड़ दिए जाएंगे।

बिजली को प्राथमिकता

गुरु नानक थर्मल प्लांट, भटिंडा की नई यूनिटों के निर्माण का काम तेज कर दिया गया है तथा रोपड़ में एक नया थर्मल प्लांट प्रारंभ किया गया है। रोपड़ प्लांट से २०० करोड़ रुपए मूल्य की ऊर्जा का उत्पादन होगा।

जल सुविधाओं का प्रबन्ध

१४७२ गांवों में पानी की सप्लाई दी जा चुकी है तथा ५८६ गांवों में सप्लाई का काम लगभग पूरा होने वाला है। शेष १६४२ गांवों में पानी की सप्लाई मार्च, १९७९ तक दे दी जाएगी।

औद्योगिक प्रगति

साहिबजादा अजीत सिंह नगर में एक 'इलेक्ट्रॉनिक्स टाउन' की स्थापना की गई है; यहां २०० करोड़ एकड़ भूमि का सुधार होगा। नांगल और भटिंडा की उर्वरक परियोजनाओं के बाद, भारत सरकार की १६ करोड़ रुपए की, राज्य में तीसरी सबसे बड़ी परियोजना होगी। ८ नए औद्योगिक विकास केन्द्र और ५ नए क्वालिटी मार्केटिंग केन्द्रों की स्थापना की गई है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण

उत्कृष्ट पंजाबी कलाकारों की सलाह समिति के मार्ग-दर्शन में एक पंजाबी परिषद की स्थापना की गई है। गोविन्दगढ़ किले में कला और संस्कृति के संग्रहालय का निर्माण किया जाएगा; आनन्दपुर साहिब में गुरु तेग बहादुर संग्रहालय बनाया जाएगा।

सरकारी कर्मचारियों की भलाई

सरकारी कर्मचारियों को अतिरिक्त मंहगाई भत्ते की सभी किस्तें दी गई हैं। सरकारी कर्मचारियों की पहली बार निश्चित मेडिकल भत्ता और दांतों के इलाज की राशि की प्रतिपूर्ति की गई है।

जन सम्पर्क विभाग, पंजाब द्वारा प्रचारित

INTERADS

मछली तुम इतनी छोटी और गन्दी सी झील में किस तरह रहती हो? यहां तो खाने का मसाला भी बहुत कम है।
मैं जा कहां सकती हूं?
जा क्यों नहीं सकती? मैं इसमें तुम्हारी मदद कर सकता हूं। यह तो मेरा काम ही है।
यहां से पश्चिम में अरब के आसपास एक दो नहीं कई विशाल झीलें हैं। उनका पानी इतना साफ है कि शीशा भी शरमा जाये और उनमें किनारे पर ऐसी मुलायम काई तैरती रहती है जैसे मक्खन हो। खाने पीने की कोई कमी नहीं, सब कुछ बेशुमार है, वहां पत्थरों से भी तेल निकलता है समझीं?
अच्छा?
पंचतंत्र
तुम चाहो तो मैं तुम्हें वहां भेजने का प्रबन्ध कर सकता हूं। ऐश करोगी, बस तुम्हें थोड़ी सी मेरी सेवाओं की फीस देनी पड़ेगी और भाड़ा देना पड़ेगा। सोच लो ऐसा सुनहरा मौका हाथ नहीं आयेगा।
मैं अकेली नहीं जाऊंगी, मेरे बाल बच्चे भी जायें तो ठीक है।
बाल बच्चे क्या अपने सारे रिश्तेदार, यार दोस्तों को भी इकट्ठा कर लो सबको भेज दूंगा वहां! मैंने तो जनता की ही सेवा के लिये ट्रैवल एजेंसी खोल रखी है। हजारों मछलियों को भिजवा सकता हूं वहां।
मैं कल ही सबको तैयार कर लेती हूं तुम इंतजाम करके आना।
एक भैंस की मश्क में पानी और मछलियों को भर बगुला रीछ की पीठ पर लदवा कर रवाना कर देता है।
पापा, आज तो मजा आ गया। इतनी सारी स्वादिष्ट मछलियां एक साथ खाने को पहले कभी नहीं मिली थीं।
बेटा, यह तो तुम्हारे अंकल ट्रैवल ऐजेंट बगुला भगत की मेहरबानी है। उसने इन मछलियों को खूब बेवकूफ बनाया। बढ़िया और खाद्य सामग्री से भरपूर झील का झांसा दिया।
डकार!
शिक्षा—जो ट्रैवल ऐजेन्टों की बातों में आकर अच्छी आमदनी के लालच में यहां अपनी जमीन-जायदाद बेच अरब या दूसरे पश्चिमी देशों को जाते हैं उनकी ऐसी ही हालत होती है।

सवाल यह है ?
क्या इनका भी जवाब है ?
कहते हैं एक बार एक चूहे के हाथ हल्दी की गाठ लगी थी तो वह पंसारी बन बैठा था। ऐसे ही राजनीति में तरह तरह के पैंतरे बदल कर श्री श्री १०८ श्री राजनारायण जी महाराज ने कैसा जोर पकड़ा था। वह फैलते और फूलते ही चले गये थे।
और फूंक मारो अभी तो तुम्हें और बड़ा बनना है।
यह बात हुई और फूंक मारो। दुनिया को, दिखादो तुम क्या हो ?
बड़े की बात कर रहे हो, मैं तो हूं ही बहुत महान।
धड़ाम
और फूंक मारो। और···और··· हैं, यह क्या हो गया ?
आगामी अंक में ऐसा ही एक और लाजवाब सवाल देखिये।

पृष्ठ १३ से आगे
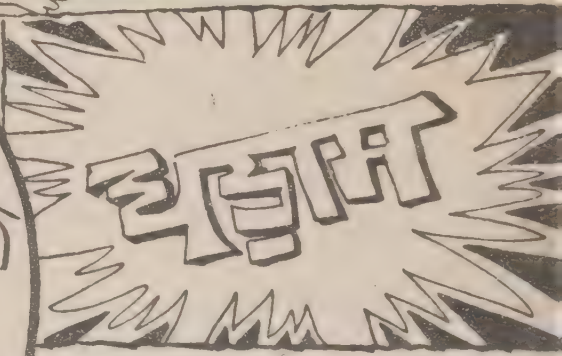
दशरथ के चेहरे पर अब तक गहरा सन्तोष और हल्की मुस्कराहट थी। उसने सब पड़ौसियों पर एक दृष्टि डाली और बोला।

'तो आप लोगों को पूरा विश्वास है कि इस कोठी में प्रेत आत्मा रहती है ?'

'अरे तो क्या इतनी देर से हम सब लोग झक मार रहे हैं···? यू नो···।' कर्नल झुंझला कर बोला।

'आप सब लोगों ने भी उसे देखा है ?'

'बिल्कुल देखा है।'

'कैसे···और किस रूप में देखा है।'

'वह पूरे कम्पाउंड में फिरती रहती है—कभी-कभी उसकी सिसकियां हम लोग अपनी कोठियों में भी सुनते रहते हैं।'

'प्रायः वह किसी का नाम लेकर पुकारती है।'

'किसका नाम लेकर पुकारती है ?' दशरथ ने मुस्करा कर पूछा।

'पता नहीं क्या···कुछ दशरथ···दशरथ कहती है।'

दशरथ के मन को एक झटका-सा लगा···वह धीरे-से बड़बड़ाया।

'दशरथ-दशरथ पुकारती है···?'

'जी हाँ—आप विश्वास कीजिए···मैंने अपने कानों से सुना है।'

'वह हमेशा रोती हुई दशरथ को पुकारती है···जैसे कोई प्रार्थना कर रही हो।'

दशरथ के मस्तिष्क में हल्के-हल्के से छनाके गूंज रहे थे···लेकिन फिर भी उसने अपने आप को संभाला और उन सब की ओर देख कर बोला—

'क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा कब से होता है ?'

सब पड़ौसियों ने कर्नल की ओर देखा। एक अधेड़ व्यक्ति बोला—

'यह बात तो कर्नल साहब ही बता सकते हैं क्योंकि यहां सबसे पुराने वही हैं।'

दशरथ ने प्रश्नसूचक दृष्टि से कर्नल की ओर देखा। कर्नल बोला—

'मैंने चालीस बरस पहले अपने डैडी से सुना था कि इस कोठी में रचना नाम की किसी लड़की का खून हो गया था जिसकी आत्मा प्रेत बन कर घूमती है···मैंने डैडी की इस बात का विश्वास नहीं किया और मजाक उड़ाया था—फिर मेरे ही सामने उस कोठी में तुम्हारे जैसा एक खूबसूरत नौजवान आकर रहा···जब उससे कहा गया कि वह इस कोठी में न रहे तो तुम्हारे ही समान उसने इस बात का मजाक उड़ाया था—और जानते हो उसके बाद क्या हुआ ?'

'क्या हुआ ?' दशरथ ने बेचैनी से पूछा।

'उसने रात को अपनी आँखों से उस प्रेत आत्मा को देखा जो उससे कह रही थी कि अगर तुम सुबह तक यहाँ से न चले गए तो मैं तुम्हें मार डालूंगी इसलिए कि तुम वह नहीं हो जिसकी मुझे प्रतीक्षा है—नौजवान ने यह समझा कि कोई डरा कर उससे यह कोठी खाली कराना चाहता है···उसने प्रेत आत्मा को पकड़ने का प्रयत्न किया—फिर जानते हो क्या हुआ ?'

'क्या ?'

'उसका दायां हाथ इतनी बुरी तरह जल गया कि हड्डियां निकल आईं और उसकी चीखें सुन कर अड़ौस-पड़ौस के सभी लोग जाग गये। जब हम बाहर पहुंचे तो हमने उस नौजवान को कोठी के फाटक के बाहर बेहोश पड़ा पाया···हमने उसे हस्पताल पहुंचा दिया—जब उसे होश आया तो उसने सारा किस्सा सुनाया—फिर उसके बाद इस कोठी में कभी कोई आकर नहीं रहा।'

दशरथ ने हल्की-सी झुरझुरी ली···लेकिन फिर भी उसने अपने दिल को संभाला और मुस्करा कर बोला—

'फिर आपने उस आत्मा को कैसे देखा ?'

'जैसे दूसरों ने देखा।'

'देखने से पहले आप भूत प्रेत पर विश्वास नहीं करते थे ?'

'बिल्कुल नहीं—।'

'इसी प्रकार मैं भी भूत प्रेतों पर विश्वास नहीं करता···क्योंकि मैंने आज तक अपनी आँखों से कभी कोई भूत प्रेत नहीं देखा—जब तक मैं अपनी आँखों से न देख लूं भला मैं कैसे भूत, प्रेत पर विश्वास कर सकता हूं ?'

अचानक तेज सुरीली आवाज गूंजी—

'भूत···भूत···।'

सब लोग चौंक कर आवाज की ओर मुड़े। लाल कपड़ों वाली लड़की दीवार से इस ओर आकर दशरथ की ओर देख कर कह रही थी—

'डैड···डैड···मुझे तो यह भी कोई भूत मालूम होता है।'

दशरथ मुस्करा पड़ा। वहां खड़े सभी आदमी दशरथ की ओर यूँ देखने लगे जैसे वह सचमुच उसको भूत ही समझ रहे हों। कई आदमियों ने दशरथ को उस कोठी में न जाने का परामर्श दिया लेकिन जब दशरथ ने किसी की बात नहीं मानी और कहा कि वह इसी कोठी में रहेगा तो लोग भी उसे सचमुच का भूत समझ कर खिसकने लगे। कर्नल भी झुंझला कर बोला—

'गो टू हैल···यू नो···मेरा काम समझाना था···खतरे से सूचित करना था।'

यह कह कर कर्नल एक झटके के साथ मुड़ा और अपनी कोठी में चला गया···दूसरे पड़ौसियों ने भी दशरथ से कुछ नहीं कहा···शेष जो रह गए थे वह धीरे-धीरे खिसकने लगे। जब दशरथ फाटक की ओर मुड़ा तो टैक्सी ड्राइवर विस्मित खड़ा दशरथ को देखे जा रहा था। दशरथ उसकी ओर बढ़ा। ड्राइवर ने अपने आपको संभाल कर कहा—

'स···स···साहब मैंने ताले में थोड़ा मोबिलआयल डाल दिया है।'

'ठीक है—धन्यवाद !'

दशरथ ने झुक कर ताले में चाबी घुमाई···अब के थोड़े से प्रयत्न से ही ताला खुल गया···दशरथ ने बड़ी मुश्किल से ताले को फाटक के कुंडे में से निकाला। इस बीच ड्राइवर कुछ घबराया-घबराया सा खड़ा देखता रहा। दशरथ ने बल लगा कर फाटक का कुंडा खोला···जब फाटक चिरमिराहट के साथ पीछे हटा तो ड्राइवर भी बिदक कर पीछे हट गया। दशरथ ने पलट कर टैक्सी की ओर मुंह किया तो उसकी दृष्टि कर्नल की कोठी की ओर चली गई जहां दीवार से गर्दन निकाले लाल कपड़ों वाली लड़की आँखों से दूरबीन लगाए झांक रही थी—दशरथ को अपनी ओर मुंह किए देख कर छलांग से नीचे झुक कर दृष्टि से ओझल हो गई। दशरथ टैक्सी की ओर बढ़ा और पिछली सीट का दरवाजा खोलने लगा तो ड्राइवर ने जल्दी से कहा—

'स···स···साहब···!'

'हाँ—कहो।' दशरथ ड्राइवर की ओर मुड़ कर बोला।

'स···स···साहब, आप अपना सामान यहीं उतार लीजिए···मैं अन्दर नहीं जाऊंगा।'

'क्यों ?' दशरथ ने आश्चर्य से पूछा।

'साहब···मैं···मैं बाल-बच्चों वाला आदमी हूं।'

दशरथ के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। उसने अपना सामान टैक्सी से उतरवाया और किराया चुका दिया। दूसरे ही क्षण टैक्सी भागती हुई मोड़ लेकर दृष्टि से ओझल हो गई। दशरथ ने स्वयं अपना सामान उठाया और फाटक में से प्रवेश करते हुए कनखियों से चारों ओर देखा। कई कोठियों में से स्त्रियां और पुरुष छिप-छिप कर झांक रहे थे—दशरथ सन्तोष से चलता हुआ बरामदे की ओर बढ़ने लगा···साथ ही वह कोठी के कम्पाउंड को भी देखता जाता था जहाँ दूब और फूलों के स्थान पर झाड़-झंखाड़ फैले हुए थे···लगता था बरसों से लान को इन्सानी हाथों ने छुआ तक नहीं—जाने क्यों दशरथ को यह सब कुछ जाना पहचाना और पहले का देखा हुआ सा लग रहा था···एक विचित्र-सा पूर्व परिचय का भान हो रहा था।

बरामदे में पहुंचकर उसने समान फर्श पर रख दिया जहाँ धूल की परतें जमी हुई थीं। छत और स्तम्भों पर मकड़ी के जाले लटके हुए थे। दशरथ ने इधर उधर देखकर एक बार फिर चाबियाँ निकालीं और मुख्य प्रवेश द्वार का दरवाजा खोलने के लिए ताले को छुआ तो ताले का निचला भाग उसके हाथ में आ गया और ताले का कुंडा लटका रह गया। दशरथ ने कुंडा भी निकालकर फेंक दिया और दरवाजे की कड़ी खोलकर दोनों पटों को अन्दर की ओर धकेला। दरवाजे की चिरमिराहट के साथ ही एक विचित्र-सा शोर गूंजा और ऐसा लगा जैसे किसी अनदेखी शक्ति ने कोई बड़ी-सी काली काली चीज दशरथ को खींच मारी हो···दशरथ झट झुक गया और चीज अजीब-सी आवाजों के साथ दशरथ के ऊपर से गुजर गई लेकिन बाहर भी नहीं गिरी दशरथ ने फुर्ती से पलटकर देखा···उसका दिल बहुत जोर से धक् धक् कर रहा था···माथे पर पसीने की बूंदें भी थीं···पर साथ ही उसके होंठों पर मुस्कराहट भी फैल गई थी क्योंकि जो चीज उसके सिर से गुजरी थी वह एक चमगादड़ थी।

दशरथ ने सामान उठाया और अन्दर घुस गया। वह एक बड़ा सा हाल था जहाँ मिट्टी की भारी परतें जमी थीं···दीवारों का प्लास्टर कई स्थानों से उखड़ा हुआ था। खिड़कियों, दरवाजों और छतों पर जाले तने हुए थे और एक अजीब सीली-सीली सी बसांध चारों ओर फैली हुई थी और उस पर अबाबीलों की बीटें जमी हुई थीं···ढेर ही ढेर—दशरथ ने आगे बढ़कर अटैची और होलाडाल फर्श पर रख दिए और फिर ज्योंही कन्धे पर लटका बैग उठाकर रखा वह अनायास उछलकर पीछे हट आया—

बैग मेज के बीच से धप की आवाज के साथ फर्श पर गिरा था और एक बार फिर दशरथ के दिल की धड़कनें कानों में धमक रही थीं लेकिन फिर उसने ध्यान से देखा तो ठण्डी साँस लेकर मुस्कराया···वास्तव में लकड़ी की वह मेज कितने ही वर्षों से वहाँ पड़ी थी···वह खाई गई थी और लकड़ी गल-सड़ गई थी···मेज भारी बैग का बोझ नहीं सहार सकी थी।

अब दशरथ ने चारों ओर से हाल का निरीक्षण किया···दीवारों पर बड़े बड़े फ्रेम भी टंगे थे लेकिन उनकी तस्वीरें धुंधली हो चुकी थीं···कई फ्रेम तो किसी ओर से गल कर गिर भी चुके थे। दशरथ ने सब कुछ ध्यान से देखा—उसके मतिष्क में अजीब सी कुरेद उत्पन्न हो गई···दिल की धड़कनों में एक अनोखी अनुभूति थी—वह सोच रहा था कि यह सब देखा भाला, जाना-बूझा क्यों लग रहा है?

दशरथ कुछ समय तक अपने स्थान पर खड़ा रहा···फिर उसने मस्तिष्क पर बल देकर सोचा···यह दांई ओर जो कोरिडोर है उसमें कमरों की पंक्तियों में चार-चार कमरे हैं···फिर दशरथ के पग स्वयं ही कोरिडोर की ओर उठते चले गये। सचमुच कोरिडोर में 'चार ही कमरे थे···दशरथ सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर पहुंचा···ऊपर वाले कोरिडोर में भी चार ही कमरे थे और उनकी बनावट बिल्कुल नीचे के कमरों जैसी थी···

दशरथ आश्चर्य-चकित-सा नीचे उतर आया···उसके मस्तिष्क में एक विचित्र-सी भावना करवट ले रही थी—यह सब-कुछ जाना-बूझा, पहचाना क्यों लग रहा है? दशरथ ने मेज के पास खड़े होकर सिगरेट सुलगाई और धीरे-धीरे कश लेने लगा···उसके मस्तिष्क में पड़ोसियों की बातें गूंजने लगीं।

'इस कोठी में प्रेत आत्मा रहती है।'

'वह दशरथ-दशरथ पुकारती है।'

'इस आत्मा ने एक किराये[...]
था, 'तुम वह नहीं हो जिसकी [...]
है—अगर तुमने कल सवेरे तक [...]
नहीं की तो मैं तुम्हें मार डालूंगी[...]

'तो क्या सचमुच इस कोठी[...]
प्रेत आत्मा रहती है?'

'क्या उसे जिस दशरथ की [...]
वह मैं ही हूं।'

'क्या इसीलिए मुझे यह क[...]
पर मिली है?'

'क्या इसीलिए मुझे यहाँ [...]
जाना-पहचाना-सा लग रहा है?[...]

दशरथ ने अपनी गर्दन [...]
बड़बड़ाया—

'सब बकवास है—।'

फिर उसने सोचा कोई प्रेत [...]
होती—कोई भूत प्रेत नहीं होता[...]
कुछ इन्सान के भ्रम की उपज है[...]
हो सकता है इस कोठी में कभी [...]
खून हुआ हो और लोगों को [...]
हो कि उस लड़की की मृत-आत्म[...]
है—जहां तक इस स्थान के [...]
होने की बात है···बहुत सारी क[...]
एक ही डिजाईन की होती हैं··[...]
कोई दूसरी कोठी देखी होगी[...]
दशरथ नाम का सम्बन्ध है य[...]
संयोग हो सकता है कि मेरा [...]
है···

यह सोचकर दशरथ को[...]
सा आ गया···सिगरेट फर्श [...]
उसने पांव से मसल डाली। [...]
बन्द होने के कारण वातावरण[...]
प्रतीत होना स्वाभाविक ही थ[...]
की कोई बात न थी···(शेष अ[...]

चन्द्रशेखर ठाकुर, मो० शहियानी (ब्रह्म स्थान), पो० व जिला मधुबनी, २१ वर्ष, पढ़ना, गरीबों की मदद करना व चटकीले कपड़े पहनना ।

रोकी बजाज द्वारा ओमप्रकाश बजाज, पोस्ट ब्रजराज[illegible] जिला सम्बलपुर (उ[illegible]), १६ वर्ष, पढ़ना, फिल्म देखना तथा दोस्ती करना ।

मनोहर सुधियानी, १०२ [illegible]टजू कालोनी, इन्दौर, (म० प्र०), १५ वर्ष, पढ़ना, सिनेमा देखना और स्कूटर तेज चलाना ।

गुलशन खुराना, ५२-अ, हिल रोड, गोकुल पेठ, नागपुर, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, दूसरों के साथ भलाई करना ।

प्रकाश कुमार लखमानी, "लखमानी भवन" कटहलबाड़ी, दरभंगा (बिहार), २० वर्ष, डाक्टर बनकर गरीबों की सेवा करना ।

हसिनुद्दीन, जनता प्रोविजन स्टोर; दुकान नं० १६५, जाफराबाद, ४२ वर्ष, दुकान पर बैठकर ग्राहकों से मजाक करना ।

अमरेश्वर सहाय द्वारा श्री बी० एन० सहाय उप निदेशक चकबल्लि, सासाराम, जिला रोहतास, १९ वर्ष, टिकट संग्रह, पढ़ना ।

सुरेन्द्र 'कमल' कोठी नम्बर एल ८८ बी, रेलवे कालोनी सिरसा, २० वर्ष, कविता, कहानियां, चुटकले लिखना, दोस्ती करना ।

सोम नरायन अग्रवाल, अलोक जनरल स्टोर टिकैट गंज, लखनऊ, १७ वर्ष, फिल्म देखना, पढ़ना, नदी में तैरना, घूमना-फिरना ।

राकेश कुमार बर्मा, मकान नम्बर २५२/६ गुरू नानकपुरा, सिविल लाइन्ज, लुधियाना, १६ वर्ष, जासूसी करना, पढ़ना ।

अजीत कुमार, एन० ओ० पी० पटना, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ना, दोस्ती को पूरी तरह निभाना ।

एस० रजनीश द्वारा श्री सुशील 'अकेला' थाना चौक, खगड़िया, २४ वर्ष, अभिनय करना, रोमांस, लड़ाना व सिसकना ।

आनन्द कुमार उसरेठे, श्री एस० आर० उसरेठे, साठिया कुआं, ३६३, जबलपुर, (म० प्र०), १४ वर्ष, कविता व कहानी लिखना ।

जिनेश कुमार जैन द्वारा पारस निवास, सिविल लाइन्स कालोनी, नयापुरा, कोटा (राज०), १८ वर्ष, रेडियो सुनना, पत्र-मित्रता ।

रामगोपाल सिंघानियां, भूली रोड, धनबाद, २२ वर्ष, सिनेमा देखना, उपन्यास पढ़ना, आस-पास के लोगों से प्यार करना ।

पुरुषोत्तम दास गुप्ता, गुप्ता भवन, गोविन्द नगर जयपुर, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, बैडमिन्टन खेलना, दोस्ती करना, संकट झेलना ।

मुकेश पाण्डे "निर्मल" ग्राम मनपुरी रायपुर, १६ वर्ष, दीवाना के साथ दीवाना होना, फर्माइश करना, कहानी लिखना ।

प्रदीप कुमार सिन्हा, भट्ठा बाजार, गांगुली पारा पूर्णिया (बिहार), १७ वर्ष, पढ़ना, पत्रिकाओं में फोटो छपवाना व क्रिकेट खेलना ।

अश्वनी कुमार अरोड़ा, गल्फ-फिल्ड कालोनी, समस्तीपुर, २० वर्ष, अध्ययन, मित्रता करना, सिनेमा देखना और उपन्यास पढ़ना ।

योगेन्द्र दास श्रेष्ठ, थहिती तोल काठमाण्डू (नेपाल), १६ वर्ष, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करना ।

आनन्द अग्रवाल, द्वारा मालीराम अग्रवाल, आनन्द भवन, भिलाई, (म० प्र०), १८ वर्ष, पेन्टिंग करना और खुश रहना ।

समपत कुमार सीहोतिया, सिकार सीताराम जगन्नाथ प्रसाद सीहोतिया, पलवल, १८ वर्ष, फिल्म देखना और दोस्ती करना ।

सुनील शारदा 'शील' रूम नम्बर-७७, ओडोनल होस्टल, मेरठ कालिज मेरठ, २० वर्ष, गाने गाना, फर्माइश भेजना, पढ़ना-लिखना ।

सीताराम, गिरधर कोल डिपो होल्डर मकान नम्बर ७८२, वार्ड नम्बर ३, कला मोहल्ला, रोहतक, ४५ वर्ष, सिगरेट में कस लगाना ।

हरिश्चन्द्र भूपालिया संवाददाता (स्वर्णिम प्रकाश साप्ताहिक) भाटापारा (म० प्र०), १७ वर्ष, युवकों से मित्रता करना, कविता लिखना ।

अरुण कुमार अरोड़ा, अरोड़ा जनरल स्टोर, कटरा दूलो, अमृतसर, २३ वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना, डाक टिकट इकट्ठे करना ।

विनोद कुमार सूद, मकान नम्बर ३२२४, सैक्टर नम्बर २७ डी, चण्डीगढ़, २० वर्ष, पत्रिकाओं के अंक एकत्र करना और पढ़ना ।

शैलेन्द्र कुमार तिवारी, १२८/ई/२० सखा सदन किदवई नगर, कानपुर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, चित्र बनाना ।

[illegible]ना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर [illegible] के माध्यम से अपना फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा । लिफाफे के कोने पर 'पन क्लब' लिखना व फोटो के पीछे अपना पुरा नाम लि[illegible] न भूलें ।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें

नाम ______

पता ______

[illegible]दर्जी व तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित । प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता ।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१३ जुलाई से १६ जुलाई ७८ तक

मेष : इस सप्ताह को विशेष अच्छा नहीं कहा जा सकता, इस दौरान कुछ ऐसी उलझनें पैदा होती रहेंगी जिसके कारण मानसिक परेशानी काफी रहेगी, घर परिवार की समस्याओं से भी चिन्ता पैदा होगी।

वृष : इस सप्ताह में शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, कारोबार की स्थिति पहले समान ही रहेगी, यात्रा भी अचानक ही करनी पड़ेगी कोई विशेष सूचना मिल सकती है।

मिथुन : पिछले दिनों की, तुलना में यह सप्ताह काफी अच्छा रहेगा, आमदनी पहले से अच्छी होगी और व्यय भी यथार्थ होगा, आर्थिक दशा धीरे-धीरे सुधरने लगेगी, कोई अधूरा काम पूरा होगा।

कर्क : इन दिनों घरेलू हालात से कुछ परेशानी पैदा होगी या कोई पुरानी समस्या फिर से पैदा हो सकती है, यात्रा हो तो सफल रहेगी, शत्रु एवं विरोधी पक्ष से सावधान रहें।

सिंह : परिश्रम करने पर भाग्य आपका साथ देगा और कामों में सफलता भी मिलने लगेगी, भाई या मित्र द्वारा साहस बढ़ेगा, आय व्यय समान ही, यात्रा आसपास की और अचानक ही करनी पड़ेगी।

कन्या : यह सप्ताह मिश्रितफल वाला है, परिश्रम करने पर अच्छे व बुरे परिणाम मिलते रहेंगे, यात्रा किसी भी समय और अचानक ही होगी, किसी प्रियबन्धु से आयोग या वियोग।

तुला : इस सप्ताह को विशेष अच्छा नहीं कह सकते, सावधानी से रहें तो आप हानि से बचे रहेंगे, हालात कुछ कुछ आपके नियंत्रण में आ जावेंगे, कोई अप्रिय समाचार या घटना भी हो सकती है।

वृश्चिक : शत्रु दबे रहेंगे, विरोधी भी आप का सामना न कर पाएंगे, सप्ताह अच्छा है परन्तु जल्दबाजी या क्रोध में कोई भी कदम न उठाएं तो अच्छा रहेगा, परिवार से सुख, यात्रा की आशा है।

धनु : व्यापार में उन्नति तथा कामकाज में भी काफी व्यस्तता बनी रहेगी, लाभ भी अच्छा होने लगेगा, आर्थिक तंगी दूर होती जावेगी, घरेलू वातावरण भी अनुकूल ही रहेगा।

पर होठो जो चं चमगा द घुस गय मिट्टी क प्लास्टर

मकर : स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, अचानक बिगाड़ पड़ सकता है, अन्य हालात तकरीबन ठीक ही चलेंगे, और सप्ताह भी अच्छा ही रहेगा, मनोरंजन आदि का कोई कार्यक्रम तय होगा।

कुम्भ : इस सप्ताह के दौरान शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, दौड़धूप काफी रहेगी और सफलता भी मिल जावेगी, अधिकतम समय दैनिक कामों में व्यतीत होगा, आय व्यय समान।

मीन : नई योजना आरम्भ न करें वरना बाद में पछताना पड़ेगा, नातेदारों से कुछ मन-मुटाव रहेगा, आमदनी पहले समान ही गी, घरेलू हालात से कुछ चिन्ता बनेगी, सी प्रियजन से मिलाप।

स्रोत पर कर की कटौती

[illegible] : कृपया ध्यान दें
अपनी "टी डी एस संख्या"
का अवश्य उल्लेख करें

निम्नलिखित नगरों में

अहमदाबाद ● दिल्ली
बंगलौर ● हैदराबाद
बम्बई ● कानपुर
कलकत्ता ● मद्रास

वेतन का भुगतान करते समय नियोजक कृपया यह नोट करें कि :

वेतन में से स्रोत पर काटे गए कर को सरकार के खाते में जमा करने के लिए **चालानों में** (फार्म संख्या आई. टी. एन. एस.-१६१) और वेतन की **वार्षिक विवरणियां** (फार्म संख्या २४) **में टी डी एस संख्या** का उल्लेख करना आवश्यक है।

याद रखें :

- टी डी एस संख्या का उल्लेख, चालानों को वेतन की वार्षिक विवरणियों के साथ मिलान करने में सहायक होती है।
- टी डी एस संख्या स्थायी लेखा संख्या से भिन्न है अत: दोनों का ही उल्लेख कीजिए।

यदि आपको अभी तक टी डी एस संख्या सूचित नहीं की गई है तो इसे प्राप्त करने के लिए कृपया अपने नगर में स्थित टी डी एस अनुभाग वेतन के प्रभारी आयकर अधिकारी से सम्पर्क करें।

निरीक्षण निदेशक
(गवेषणा, सांख्यिकी और प्रकाशन)
आय कर विभाग
नई दिल्ली-११०००१
द्वारा जारी किया गया.